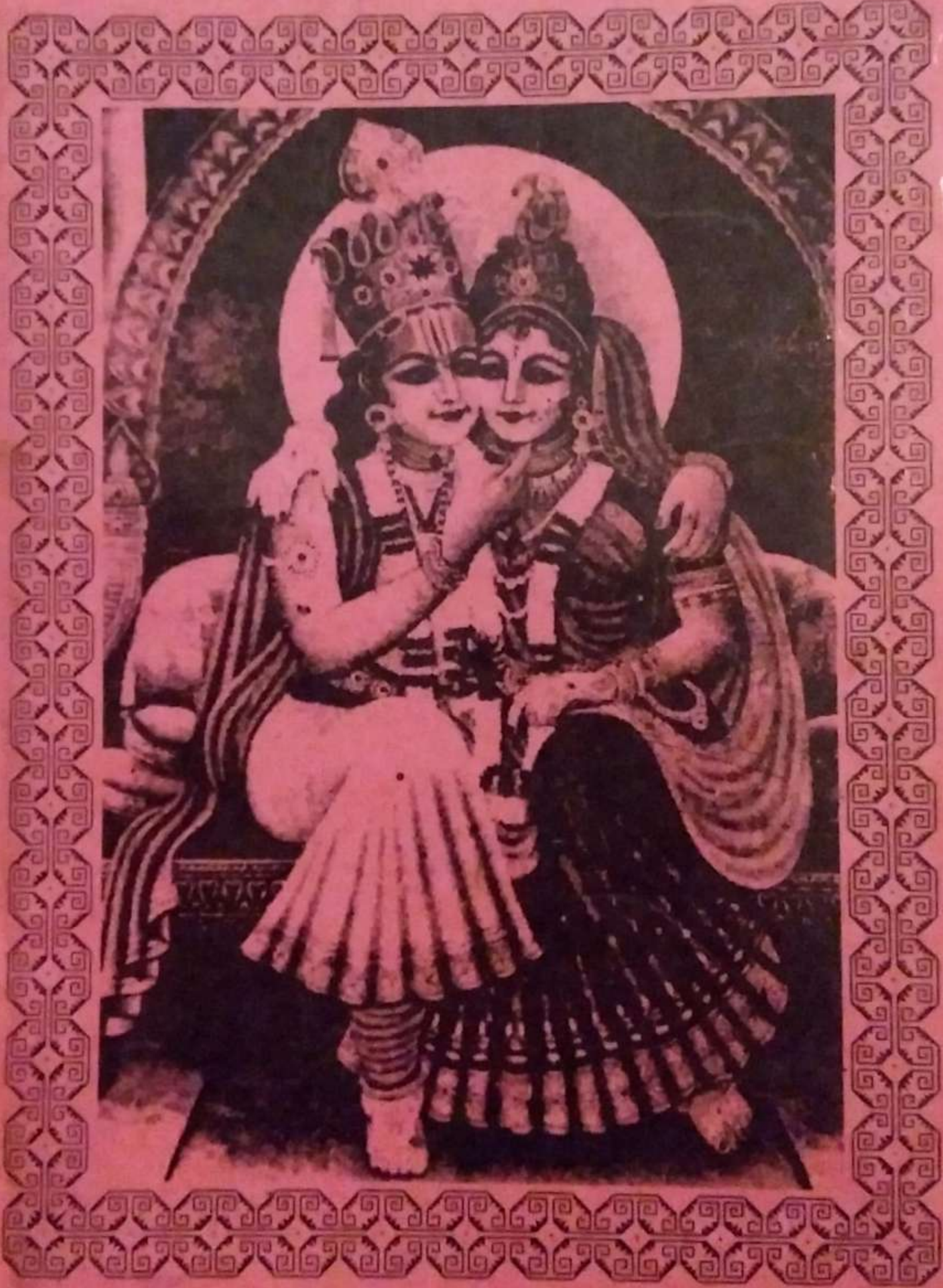
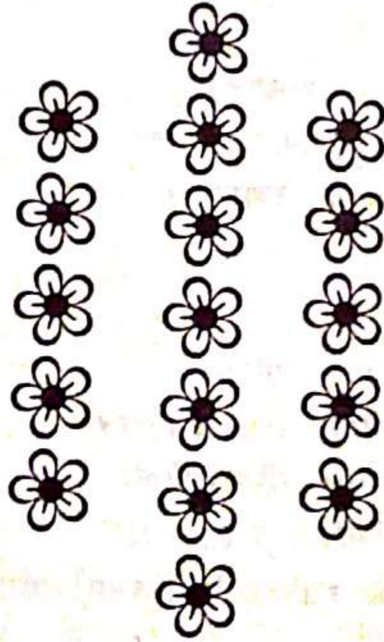
पद्मराग



पटरानी सखी "पद्मलता"

पद्मराग



रचयिता :

पटरानीसखी "पद्मलता"

श्रीसिप्पा सुन्दरी सखी
06276-223942

पद्मराग
रचयिता — पटरानी सखी "पद्मलता"

सम्पादक :
युगलकिशोर झा
श्यामलकिशोर "आनन्द"

संयोजन :
गीतावाटिका प्रकाशन
पो०—गीतावाटिका
गोरखपुर २७३००६
E-Mail:- rasendu@vsnl.com

प्रथम संस्करण २०५७
न्यौछावर — बीस रुपये

प्रकाशक
१०८, महन्थ श्रीसियाराघव शरणजी
सुन्दर सदन
अग्निकुण्ड, जनकपुर

।। श्री सीतारामौविजयेते।।

प्रकाशकीय

श्रीसीतारामजी युगल सरकारकी परमानुकम्पा एवं श्री सद्गुरू भगवान्‌की सत्प्रेरणासे प्रस्तुत पदावलीके प्रकाशनका शुभावसर आज प्राप्त हुआ है, यह बड़े हर्षकी बात है।

बहन पटरानी सखी रचित इन पदोंका वैष्णव समाजमें प्रायः दो दशकोंसे गायन हो रहा है। इन पदोंके मधुर भाव एवं भक्ति रससे सराबोर शब्दोंके कारण इसकी लोकप्रियता दिनानुदिन बढ़ती ही जा रही है।

अपने गुरू भाई–बहनों तथा शिष्य–शिष्यादिकों एवं प्रेमी गणोंके द्वारा बारम्बार अनुरोध किया जा रहा था कि इन पदोंका व्यवस्थित संग्रह एवं पुस्तकाकार प्रकाशन हो। वैष्णव समाजके देदीप्यमान सूर्य परमादरणीय सन्त श्रीमन्नारायणदासजी भक्तमाली "मामाजी बक्सरवाले" जब इस वर्ष जनकपुर पधारे तो उन्होंने भी कहा कि "दीदी के पदोंको सिघ्रातिसिघ्र प्रकाशित कराइये" उनके स्नेह–सम्पुटित आग्रहका ही परिणाम यह पुस्तिका "पद्मराग" के रूपमें आपके हाथोंमें है।

इसमें श्रीसीतारामजीके मधुरलीलाओंसे सम्बन्धित वर्षभरके प्रायः सभी उत्सवोंके पद हैं, जिससे यह वैष्णव समाजके लिये अत्यन्त उपयोगी एवं संग्रहनीय हो गया है।

अस्तु—इसके प्रकाशनमें काशीकी प्रसिद्ध समाज सेविका गायत्री देवी बाजोरिया, सीतामढ़ीकी मालती बहन धर्मपत्नी प्रो० देवकृष्णदास एवं गोरखपुर स्थित श्रीराधा–कृष्ण साधना केन्द्रके जयशंकर मिश्र "श्रृंगारी"जीने तन–मन–धनसे सहयोग किया। भगवान् इन्हें अनन्य प्रेमाभक्ति प्रदान करे। इन सबको मेरा हार्दिक साधुवाद।

प्रस्तुत पुस्तकमें जो भी त्रुटि हो कृपया पत्र द्वारा सूचित करें। जिससे अगला संस्करण संशोधित रूपमें प्रकाशित हो सके।

विनयावनत :

भाद्रपद तीज शुक्लपक्ष
सं० २०५७ विक्रमीय

सियाराघव शरण
सुन्दर सदन
अग्निकुण्ड, जनकपुर धाम

दो शब्द

उद्भवस्थिति संहार कारिणीं क्लेश हारिणीम्।
सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोऽहं रामवल्लभाम्।।
सारद सेस महेस बिधि आगम निगम पुरान।
नेति नेति कहि जासु गुन करहिं निरंतर गान।।

श्रीजनकधामेश्वरी श्रीरामहृदयेश्वरी, सर्वेश्वरी, रसेश्वरी, सदासुहागिनी श्रीकिशोरीजूकी लीलाओंका गायन श्री सरस्वतीजी, श्री शेषजी, श्रीशिवजी, श्रीब्रह्माजी और शास्त्रवेद पुराण आदि चाह करके भी नहीं कर पाते, यह सच ही है।

श्रीरामवल्लभा, श्रीरामाह्लादिनी, रसस्वरूप श्रीजनकनन्दिनी श्रीकिशोरी जू की मधुर लीलाओंकी अथाह अपार सरसता वस्तुतः अगम्य है।

इन्हीं रसमय लीलाओंको किञ्चित गुनगुनानेका अवसर मुझ अकिञ्चनाको मिल सका, यह मेरा परम सौभाग्य है और यह अकथ सौभाग्य मिल सका परमाराध्य श्रीसीतारामजीकी अहैतुकी कृपासे और सद्गुरूदेव भगवान्के अमित वात्सल्यसे।

नित्यकोवरविहारी श्रीयुगल सरकारकी मधुर लीलाका यह गायन सभी रसिक भक्तोंको परमानन्द प्रदान करे।

यही मेरी मंगलाभिलाषा है।

गुरूचरणरज आश्रिता
सदाविनीता
पटरानी सखी "पद्मलता"

विषय अनुक्रमणिका:

पुस्तक प्राप्ति स्थान

१. सुन्दर सदन, अग्निकुण्ड — जनकपुर धाम — नेपाल

२. श्रीमती रामकिशोरी सखी — फुलवारी टोल, — जयनगर

३. श्री लक्ष्मीशाह (श्रीमती रामसखी बहन) — आर०के० कॉलेज गेट, मधुबनी — बिहार

४. प्रो० श्री डी०के० दास जी (श्रीमती मालती बहन) — सोनावती कोलोनी मेहसौल चौक, सीतामढ़ी — बिहार

।। श्रीगुरूचरणकमलेभ्योनमः ।।



❀ "समर्पण ❀

नहि अछि भाषा भाव ने शैली
कवितक गुण नहिं दोष अनेक।
छन्द प्रबन्धक ज्ञान ने रंचहु
गुरू पद कमल भरोसा एक।
युगल रहस करवावथु रचना
कृपा कोर सँ हेरथु नेक।
"पटरानी सखी" कयल समर्पण
राखथु अपन विरद के टेक।

श्रीमैथिलीमुखचन्द्रचकोराय नमः
श्रीमतेरामानन्दाचार्याय नमः

पदमराग

।। श्रीगणपतिवन्दना ।।

हे माँ गौरी सुत सँ कहियौन,
गणपति हेरथु हमरो ओर।
बाल केलि लीला कए औता,
जखने बैसता अहाँ क कोर।।
विघ्न विनाशक बुद्धि प्रकाशक,
सुयश भेल छनि जग में शोर।
प्रभुगुण गायक सब सिधिदायक,
सुनलहुँ विरदावलि वर जोर।।
कृपा करथु एतवै हमरा पर,
हिय में आवय चरित हिलोर।
गावी छवि गुण रूप माधुरी,
युगल विहार रहस रस बोर।।
अवगुण हमर नै लावथु मन में,
मति मलीन अति अधम अघोर।
मैया अहिंक कृपा सँ सुनता
"पटरानी सखी" केर निहोर।।



(२)

।। सरस्वती वन्दना ।।

सरस्वती अहीं अवलम्ब हमर।
हे मातु अहाँ बिनु आस ककर।

अहाँ हँस उपर कमलासन दय
राजित विहरै छी जग भरि में।
कने दया दृष्टि सँ हेरू एम्हर।। हे....
वीणा पुस्तक कर धारण कय
अज्ञान हरै छी भक्तन के।
बरसैयऽसुबुद्धि हेरै छी जेम्हर।। हे....
अछि प्रबल अविद्या कुमति भरल
मृग तृष्णा आवि अरल उर में।
करू सुदृष्टि हेरि कय नाश तकर।। हे....
रंचहु भरोस नहि बुधिबल के
हम विनय करै छी चरणन में।
करू दया एहन रीझथि सियवर।। हे....
गुणगान युगल पद पंकज के
अभिलाष परम लागल मनमें।
दिय दिव्य ज्योति भरि उर अन्तर।। हे....
सूझय चरित्र प्रिया प्रियतम के
रस रहस भरल वाणी मुखमें।
दिय "पटरानी" यैहे एक वर।। हे....



(३)

।। गुरू वन्दना।।

सतगुरू पूरण ब्रह्मथिका करूणामय अवतार।
गुरू सेवा बिनु जगत में जीवन भूमिक भार।।
चरण कमल रति दिय हे गुरूवर।।
आहाँ के कमल पद सब सुखदायक
हमर अरजि सुनि लिय हे गुरूवर।।

मोह जनित भ्रम फन्द विनाशक
सकल कुमति हरि लिय हे गुरूवर।।
निज शरणागत जानि दयानिधि
निर्मल मति कय दिय हे गुरूवर।।
"पटरानी सखी" दीन हीन पर
कनेक सुदृष्टि हेरि दीय हे गुरूवर।।



(४)

सब विधि दीन ओ मलीन हीन जानि मोहि,
अवगुण विसारि प्रभु कृपा दृष्टि करू यौ।।
असरन शरण सदगुरू चरण हरण दुख,
परण विचारि मोर सुधि ने बीसरू यौ।।
श्रीसद्गुरू पद कमल विना एकोनै भरोसा मोहि
अति असहाय जानि भव दुख हरू यौ।।
विगरल सम्हारू मोर जनम–जनम केर
"पटरानी सखी" पर कृपा सिन्धु ढरूयौ।।



(५)

हमरा गुरू चरण में लागल पिरितिया
कोना विसरवइ ना।।
सतगुरु हमरदया के सागर शरणागत हितकारी
महामोहतम नासथि छन में रविकर वचन उचारी
से हम कोना विसरवइ ना।।
परम ब्रह्म साकार प्रगट छथि भव दुख मेटनहारी
जीव पीव सम्बन्ध करावथि महिमा अकथ अपारी

से हम कोना विसरवइ ना।।
युग युगान्त के विछुरल भटकलदीन मलीन दुखारी
"पटरानी" गुरूदेव दयामय कर गहि लेल उबारी
से हम कोना विसरवइ ना।

---❀---

(६)

हमर गुरूदेव करूणामय कखन ककरा पर ढरि जैता।
जे छथि हुनकर चरण आश्रित सकल ओ भक्त तरि जैता।।
ओ ब्रह्मा छथि ओ शंकर छथि, ओ छथि साक्षात नारायण।
जे सुमिरै छथि बचन मन क्रम, कुसँकट सँ उबरि जैता।।
गुरू पद कँज कामद धेनु सँ बढ़िक निगम गावै।
जे सेवइ छथि सदति हुनका ओ घर भण्डार भरि जैता।।
कृपा मय दृष्टि छनि हुनकर सकल सिधि निधिस्ववश अनुछन।
देखैते पात्र वर भागी, ओ अपनहिं मुद झहरि जैता।।
उद्धारलनि कोटियोपापी ओ छथि कर्णधार भवनिधि में।
शरण में आयल "पटरानी" कोना करूणा विसरि जैता।।

---❀---

(७)

।। मिथिलावन्दना।।

अछि दिव्य हमर मिथिला साकेत नाम न्यारी
जहाँ आवि प्रगट भेली सिया विश्व रचनिहारी।।
मिथिलाक भूमि रजलाऽ तरसैथि देवतागण
छथि धन्य मातु मिथिला सब पाप हरणिहारी।।
ऋषि सिद्ध सन्त योगी परपंच के वियोगी
ऐहि दिव्य भूमि थल में निवसथि मुनीशझारी।।

मिथिला पुरीक दर्शन, सौं त्रिविध ताप छूटै
ईधूरि सिर धरैते सिय धाम के अधिकारी।।
श्रीजनक पुरिक महिमा नहि वेद पारपावय
विहरथि जहाँ लली संग श्री अवध के विहारी।।
मिथिला गली गलिन में अछि युगल पद सुअंकित
धन्य–धन्य छथि निवासी सिय चरण धूरिधारी।।
ऐहि भूमि जन्म लहिक भेली सिया "पटरानी"
श्री लाड़िली हमर छथि प्राणहुँ स वढिक प्यारी।।



(८)

आहाँ छी परम सुखदैया, हे मिथिला मैया।
वेदहुँ जिनकर पार नै पावथि, से भेला आहाँ क जमैया।। हे..
अन धन हीन मलीन दीन केर आहाँ छी कामधेनु गैया।। हे....
भव सागर में डुबैत जीव के पार करै छी बनि नैया।। हे....
मनमोहनदुलहा श्रीकिशोरी जी के आहाँ संग चतुर खेवैया।। हे....
"पटरानी" के परवाह नै रँचहु गोद में धैने छथि धैया।। हे....



(९)

मिथिला छी अहाँ अपनहिं समान।
कवि कहथु कहाँ जोड़ी जहान।।
जहाँ हरित–हरित तरूलता जाल।
रमनिक रसाल बनपिक सुतान।।
सर ललित कलित सरिता प्रवाह
झहरै झरना हिमगिरि महान।।
जंगल–मंगलमय विविध जन्तु।

बहै त्रिविध पवन जनु मदन बान।।
पर्वत सर्वत्र सुदर्शनीय
करसथि दर्शक सब धातु खान।।
"पटरानी सखी" केर जन्मभूमि
सदगुरुक कृपा सँ भेल ज्ञान।।



(१०)

जय बोलो जनकपुरधामकी दिव्य सु मिथिला ग्राम की।। जय
जहाँ मणिनमण्डप में दर्शत झाँकी सीताराम की।। जय
जन्म भूमि श्री जनक लली की कमला सरित सु सलिला
दरश–परश मज्जन करते हीं देत सीय पिय से मिला
रोम–रोम से निकसन लागे ध्वनि मधुर सियारामकी।। जय....
जहाँ श्री अवध–बिहारी आकर बन गये मिथिला बिहारी
सखी सहेली साली सरहज संग में सिया सुकुमारी
महारास रचि खचित भूमि में लीला ललित ललामकी।। जय....
जहाँ की धूरि से तरी अहिल्या नाम रामजीका शोर हुआ
बने विश्वविजयी रघुनन्दन जहाँ धनुष को मात्र छुआ
जयमाला दीए जनक लड़ैती विशद कीर्ति के दाम की।। जय....
"पटरानी" दुलहिन को पाकर जहाँ कृतारथ रामहुये
श्याम–गौर जोड़ी चितचोरी निरखि नयन प्रेमाश्रु चुये
सुरमुनि विप्रवेद धुनिगर्जहिं मुद्रा स्वर श्रुतिसाम की।। जय...



(११)

।। किशोरी बन्दना।।

हे विदेहजा स्वामिनी अहींक चरण केर आस
"पटरानी" हिय कुँज में करू पिय सहित निवास

आहाँ के कृपाबिनु सुनु सिय स्वामिनि,
निर्मल मति हम पायब कहाँ सँ।।
निज बुद्धि बलक भरोस ने रँचहु
चरण–कमल गुण गायब कहाँ सँ।।
बन्दि रसिक जन सुयश बखानल
से शुभ गुण हम पायब कहाँ सँ।।
काँच किरचि उरधार न कय हम
मणि मुक्ता झहरायब कहाँ सँ।।
अवगुन हमर ने हेरब स्वामिनि
कपट भरल छी गनायब कहाँ सँ।।
"पद्मलता" लघु बहिन अहीं के
नाता दोसर लगायब कहाँ सँ।।



(१२)

बहिन अपन श्री किशोरी जी हमर छथि।
अनाथक नाथ श्री किशोरी जी हमर छथि।।
ताप त्रय सूर्यक किरण जे तपैत छथि।
शीत छत्र छाँह श्रीं किशोरी जी हमर छथि।।
कृपा दृष्टि वृष्टि एक बेर जे करैत छथि।
मोद सरि वाढ़ि श्री किशोरी जी हमर छथि।।
दुसह दरिद्र दुख दाह जे जरैत छथि।
अमृतक सर श्री किशोरी जी हमर छथि।।
श्री राम जी के "पटरानी" महामहरानी छथि।
स्वामिनी सखी के श्री किशोरी जीहमर छथि।।



(१३)

हनुमत् वन्दना

बजरंगबली आउ,
श्रीसीताराम नाम सुमिरन कराउ।।
पाप–ताप घेरने अछि कलि सँ बचाउ,
भजलो ने होइयऽ कोना प्रभुगुण गाउ।।
हेरू कृपा स कुमति सब हटाउ
सुमति एहन दीय सियवर रिझाउ।।
नाम रटी रसना में रूचि उपजाउ
संत अनुरागी स संगति कराउ।।
अवगुण हमर देखि सुधि ने भुलाउ
"पटरानी" प्रीतम स लगन लगाउ।।



(१४)

।। रामजन्म बधाई।।

प्रगट भेला चारू भैया हो रामा राजमहल में।
राम भरत, लक्ष्मण, रिपुसूदन,
सकल जगत सुखदैया हो रामा राजमहल में।
रूप अनूप निहारी लालन केर,
धन–धन भेली तीनों मैया हो रामा राजमहल में।
परमानन्द पाओल नृप दशरथ
आजु भेलै कोश खुलैया हो रामा राजमहल में।
हीरा मणि माणिक मनपूरण
लूटै सब लुटवैया हो रामा राजमहल में।
नाचै युत्थ–युत्थ मिलि ढाढिनि
गावै जनम बधैया हो रामा राजमहल में
ब्रह्मादिक सुर सिद्धगगन सँ
करथि सुमन बरषैया हो रामा राजमहल में।

'पटरानी सखी' देखि मगन मन
आजु आनन्द सुधर समैया हो रामा राजमहल में।



(१५)

आजुक समय सुहावन, अतिमनभावन हो।
रानी कौशिल्या जी के गोद, अमित छवि छावन हो।।
प्रगट भेला नृप नन्दन, रघुकुल चन्दन हो।
रूप सुधा छवि सिन्धु, अखिल जग बन्दन हो।।
हर्षित भेल चर-अचर, मुदित पुरबासिन हो।
ललना घर-घर सोहर, मंगल गावय सुवासिनि हो।।
बन्दनबार बँधाओल कलश धराओल हो।
मंगल साज सम्हारी सुगंध सिचाओल हो।।
गुरू महिसुर पद बन्दि अमित सुख पाओल हो।
परम आनन्द नृपरानी सुकोश लुटाओल हो।।
जय-जय धुनि करि सुरन सुमन बरसाओल हो
'पटरानी सखी' गुन गावि जनम फल पाओल हो



(१६)

आजु सुदिन शुभ मंगल आनन्द छायल हो।
योग लगन ग्रह सुखद से आवि तुलायल हो।।
चैत इजोरिया के नौमी सबहिं बिधि पावन हो।
मध्य दिवस सुख मूल ललन प्रगटावल हो।।
ब्रह्मादिक सुर सिद्ध समय लखि पाओल हो।
चढ़ि-चढ़ि गगन विमान सुमन बरसाओल हो।।
प्रगट भेलाह रघूलाल देखन सब धायल हो।

भूपति भवन आनन्द उदधि उमरायल हो।।
झुण्डक झुण्ड चलति सब अवधक नागरि हो।
सहज श्रृंगार सम्हारि रूप गुन आगरि हो।।
मंगल कलश भरिथार गावैत सब मंगल हो।
बैसल भूप दुआर मोद मुद रंगल हो।।
लालन रूप निहारि करथि न्योछावर हो।
बेरि–बेरि आरति उतारि झुकथि चरणन पर हो।।
घर–घर बाजय बधाई अवध सुख फूलल हो।
"पटरानी सखी" लखि लालन सुधि–बुधि भूलल हो।।



(१७)

प्रगट भेला चारू भैया, महल में बाजे बधैया।
धनभूपति धन धन पुरवासी धन–धन भेली तीनों मैया।।
योग लगन अनुकूल नौमि तिथि मधुमय सुघर समैया।।
परमानन्द अवध पति पौलनि सुमन परम सुखदैया।।
गज रथ तुरग हेम हीरामणि लुटवथि कामद गैया।।
राज दुआर भीर भूसुर केर याचक टुटल झमैया।।
रंग–विरंगक साज–बाज लय गावैय ऽ गुनी गवैया।।
मंगल कलश साजि बहु नागरि नाचैय ता ता थैया।।
देव–सुमन वरषाय गगन सँ जय–जय शोर मचैया।।
"पटरानी सखी" चिरजीवो ललन सब प्राण जीवन रघुरैया।।



(१८)

बाजे–बाजे बधैया बाजे।
आजु राज महलमें बाजे।।
चैत सुदी नौमी प्रगट भेला लाल छवि छाजे।

चारू भैया के रूप छवि छाजे।।
गान निसान नभ नगर में शोर घन गाजे।
जेना सावन घटा घन गाजे।।
कौतुक देखाय सब नाचैय नट दल साजे।
करि–करि बहु नखरा नाजैं।।
आनन्द विभोर आज राजा–धिराज सिरताजै।
अति दिव्य सिंहासन राजै।।
खोलल खजाना लुटावै हीरा मणि लखि लाजे।
धन निरखि धनद अति लाजै।।
याचक के भीड़ भारी लागल दुआर दरबाजे।
आवै झुण्ड–झुण्ड मिलि भाजे।।
"पटरानी" जीवन सुफल भेल आजु सब काजे।
भेलै पूरण सभक मन काजे।।



(१६)

आजु अवधनगर में शोर नगाड़ा धमकैयऽ।
चारि सुवन पाओल नृप दशरथ,
सुनि बाजन घनघोर सुवासिनी रमकैयऽ।
सजि–सजि कंचनथार आरती
पहिरल जड़ित पटोर चमाचम चककैयऽ।
मंगल–कलश साजि बहु नागरि
नाचै प्रेम विभोर विभूषण झमकैयऽ।
चहल–पहल भेल राजमहल में
आनन्द उठै हिलोर दिव्य दुति दमकैयऽ।
बान्हय बन्दनबार मलिनिया
गुथि गजला के छोर गमागम गमकैयऽ।
राज दुआर भीड़ भेल भारी

याचक जुटल करोड़ रोकै नहि थमकैयऽ।
"पटरानी सखी" देखि मगन मन
शिशु छवि लखि तृणतोर ने उपमा समकैयऽ।

———❀———

(२०)

हम लेब जड़ाव मणिकंगना हे रानी ।।
बाजे बधाई आजु राजमहल में, ढाढ़िन नाचै बिच अँगना ।।
बहुत दिनन सँ आशा लगाओल दियौ हमर मुँह मँगना ।।
कण्ठा नै लेब मँगटीको नै लेबै लेबै न तिलड़ी हलना ।।
कानझुमक नकबेसर न लैवै लैवे न मुँदरी छलना ।।
लालन के छवि लखि बलि–बलि जेवै बेसी करब हम तंगना ।।
"पटरानी सखी" हुलसैत घर जेवै चिरजीवो तोर ललना ।।

———❀———

(२१)

लालन आहाँक ललचौना ए, मैया लियउ खेलौना।
अति सुख दौना रूप लोभौना सबहक जिय जुरौना ए।
हाथी हुमौना घोड़ा घुमौना गाड़ी गढल गुरकौना ए।
सुग्गा सोहौना मैना मोहौना नील कण्ठ निरखौना ए।
हंस–हंसौना–मयुर मुसकौना, चकवाचित चोरौना ए।
"पटरानी सखी" बिन मोल बिकौना, गोद लेवइ छवि छौना ए।

———❀———

(२२)

।। श्री जानकी जन्म बधाई ।।

सिया जनम बधाई घनघोर भेलइ मिथिला में शोर भेलइ ना ।

धन जनक जी ज्ञानी, धन धन सुनैना रानी
अनमोल निधि लली जिनका कोर भेलइ । मिथिलामें...
धन भेलइ माधव मास सब के हिया में हुलास,
तिथि नौमीक पूनम इजोर भेलइ । मिथिलामे...
धन मिथिला निवासी सिया चरण उपासी,
आई सभक सुकृत फल जोर भेलइ। मिथिलामें...
याचकक भीड़ भारी खूलल कोश औ बखारी,
बरषै हीरामणि माणिक बटोर भेलइ । मिथिलामें...
भेलै गगन विमान सँ सुमन झहरान
देव दुन्धभी के धुनि चहुँ ओर भेलई। मिथिलामें...
आशिष भेलइ सिद्ध बानी, सिया होइथिन "पटरानी"
नाचै–गावै सब आनन्द विभोर भेलइ। मिथिला में...



(२३)

बधाई बाजे सजनी, जनक जी के अंगना ।
धन राजा धन रानी सुनैना
झुलवइ छथि लली नीलमणि पलना ।
घर–घर आनन्द बधाई जनक पुर
याचक जन पावय मुँह मंगना ।
राजा लुटावथि कोष खजाना
रानी लुटावै गले हार मणिकंगना ।
ब्रह्मादिक सुर सिद्ध गगन सँ
जयति–जयति करै सुमन के झरना।
"पटरानी" शिशु देखि मगन मन
मञ्जु मधुर मृदु छवि निधि ललना ।



(२४)

श्री जनक लली के बधाई हे गावू झूमि–झूमि सजनी ।
वरष गाँठ आजु रामप्रिया केर मिथिला पुर छवि छाइ हे ।
बन्दनवार बँधाओल घर–घर मंगल कलश सजाइ हे ।
माधव मास शुक्ल नौमी तिथि प्रगटलि सिया सुखदाइ हे ।
रानी सुनैना के जन्म सुफल भेल सुरगण करथि बड़ाई हे ।
होयती सिया "पटरानी" अवधकेर अचल विरद प्रभुताइ हे ।



(२५)

बाजे विविध रंग बाजन झमाझम सुनैना माइ के आंगन।।
प्रगट भेली जगसिरजन हारिनि, बनि शिशु रूप सुहावन।।
कनक कलश सजि–सजि बर नागरि नृत्य करथि मन भावन।।
सुरगण चढ़ल विमान गगन सँ करथि सुमन वरषावन।।
"पटरानी" मृदु मञ्जु कमलपद मुनि मन मधुप लोभावन।।



(२६)

लुटाबू रानी हे लाड़ली के बधैया।।
राजमहल में नाचे ढाढिनियाँ,
कटि लचकानि हे, दृग मटकानी हे,
गावे ता ता थैया।।
खोलू खजाना लुटाउ हीरामणियाँ
सुनु महारानी हे, सोना–चानी हे
आई के पुछवइया।।
गोद प्रगट भेली सिया गुन खनियाँ
जगत जानी हे, मनमुददानी हे

सब के सुखदैया।।
हरषि उठलि मिथिलेश जू के रनियाँ
सुख सरसानि हे, निधिवरषानी हे
लूटय लुटवैया।।
बाल सुछवि अति मनभावनियाँ
कते ललचानी हे, मृदु मुस्कानी हे,
लखि लेवै बलैया।।
उमगि–उमगि गावै "पटरनियाँ"
मधुर वाणी हे, अमिय रस सानी हे
आजु सुघरसमैया।।



(२७)

।। श्रीचन्द्रकला जी के बधाई।।

बधाई बाजे हे, चन्द्रभानू जीके अँगना।।
भानू जी के अंगना, चन्द्रप्रभा जी के अँगना।
कंचन विपिन में बजैय पँच बजना।। बधाई.....
माधव मास शुक्ल तिथि चौदसि।
प्रगटलि सिय प्रतिबिम्ब कला शशी।
सुखद नक्षत्र ग्रह योग शुभ लगना।। बधाई......
जनक लली जू के छठि दिवस मधि।
अति आनन्द उमरि गेल सुख निधि।
रानी चन्द्रप्रभा जू झूलावै मणि पलना।। बधाई.....
मंगल साज सजाओल सब विधि।
बरसाओल कुम–कुम केशर दधि।
गगन दुंदभी बाजे, नाचथि देवाँगना।। बधाई.....
दिव्य सरूप विलोकि बाल छवि।

सुर मुनि चकित कोना बरनत कवि।
गावै "पटरानी" आइ दहिन भेल विधिना।। बधाई....



(२८)

आजु चन्द्रकला जू कै बधाई, गाउ सखि झुमि—झुमिक ऽ !!
चन्द्रप्रभा जू के गोद में प्रगटलि,
सिय छवि अपर सुहाइनचाउ सखि छूमि—छूमिक ऽ ।।
आनन्द उमरि चलल चहुँदिश में
पुरोहित हिय हरषाइ, नखत योग गुनि गुनिक ऽ ।।
महारानी भेली देखि मगन मन
ललकि परम सुख पाइ कपोलन चुमि चुमिक ऽ ।।
"पटरानी सखी" जनम सुफल भेल
मिथिलापुर में आइ बधाई सुनि सुनि क ऽ ।।



(२६)

।। श्रीहनुमानजी की बधाई।।

बाजे—बाजे बधाई घनघोर अंजनि के अंगना।।
परम भक्त भेला प्रगट राम के
कपिकेशरी किशोर अंजनि के अंगना।।
जिनक सुयश श्रुति बेद बखानय
विरदावली बरजोर अंजनि के अंगना।।
कनक कलश सिर धरि बहु नागरि
नाचय प्रेम विभोर अंजनि के अंगना।।
अतुलित बल तन तेज प्रकाशित

शोभित जननी कोर अंजनिके अंगना।।
"पटरानी सखी" देखि मगन मन
जय–जय धुनि चहुँओर अँजनिके अंगना।।

———❀———

(३०)

बाजे रंगीली बधाई हे, चलू देखैलाऽ सजनी।।
प्रगट भेला आजु मारूत नन्दन
भक्तन के सुखदाई हे, चलू देखैलाऽ सजनी।।
नृत्य करथि गावथि वर नागरि
हनुमत जन्म बधाई हे, चलु देखैलाऽ सजनी।।
हेम वरन तन प्रभा प्रकाशित
शोभा कहलो ने जाई हे, चलू देखैला ऽ सजनी।।
निरखि–निरखि शिशुपर तृन तोरथि
प्रमुदित अंजनि माई हे, चलू देखैलाऽ सजनी।।
"पटरानी" बलिहारी चरण पर
भक्ति निछावर पाई हे चलु देखैलाऽ सजनी।।

———❀———

(३१)

हमर बौआ हनुमान! देखैते–देखैते कोना भेला बलवान।।
गोद स उछलिगेला गिरी के चट्टान
चूर–चूर कैलनि ओ कुलिस पाषान।। हमर बौआ....
अरूण उदय देखि गेला आसमान
मुख मेलि लेल जानि फल पकवान।। हमर बौआ.....
भेल हाहाकार जग संकट महान
देवन्ह अरजि सुनि रवि उगलान।। हमर बौआ....

वीर–रस साहस अतुल जग–जान
पवन तनय बल बुधि के निधान।। हमर बौआ....
भानु स पढ़न गेला गगन उड़ान
पाछू पग बदलनि बेद ओ पुरान।। हमर बौआ....
धन–धन अंजनि के सुत हनुमान
सुरन्ह चकित भेल बल के बखान।। हमर बौआ....
बाल केलि कौतुक किलकि मुसकान
"पटरानी" देखि–देखि हिया हुलसान।। हमर बौआ....



(३२)

छथि महावीर गदाधारी, हमर बजरंगबली।।
लाल देह लाले पट भूषण, मुरति मंगलकारी।।
अंजनिनन्दन दुष्ट निकंदन, भक्तन के दुखहारी।।
करूणानिधि प्रभुके प्रिय सेवक, पवन वेग पदचारी।।
रोम–रोम में राम विराजे, कपितन शोभाभारी।।
अतुलित बल–प्रताप चहूँयुग में, संतन्ह के हितकारी।।
पींग विलोचन संकट मोचन, शरणागत सुखकारी।।
अष्ट सिद्धि नवनिधि के दायक, शुभगुन के भण्डारी।।
"पटरानी" सियाराम नामरत, रघुपति चरण पुजारी।।



(३३)

"आरती"

आरती उतारू सखि बौआ हनुमान के।
अंजनी के लाल सब शुभ गुन खान के।
पवन तनय अतुलित बलधारी

सन्तन्ह शरणागत हितकारी
हृदय बसत सियाराम बिहारी
मंगल मूरति करूणा निधान के। आरती.....
केशरी नन्दन जग सुखकारी
असुर निकन्दन जन दुखहारी
लाल बसन भूषण छवि भारी
अदभुत प्रभा कपि वीर बलवान के। आरती.....
परम अनन्य सेवा ब्रतधारी
सियाराम जी के चरण पुजारी
यश प्रताप कीरति उजियारी
"पटरानी" कहू कोना महिमा महान के। आरती.....



(३४)

जय जय जय मिथिला पुरी, सब सुख रसके खानि।
प्रगट भेली श्री मैथली, जग मुद मंगल दानि।।
धन्य जनक भूपाल मणि, पावन मिथिला देश।
श्रीसीताराम परात्पर, दुलहिन दूलह वेष।।

।। पुष्प वाटिका लीला।।

"मालिन के स्वप्न"

श्री मिथिलापति बाग क मालिन,
वर भागिन ओ छथि सब भाँति।
नैनक फल सयनहि में पौलनि,
सपना देखलनि आजुक राति।

कहथि कंत सँ सुनु पिय माली
अजगुत सपना देखल भोर।
"पटरानी" सिय बागमें एला
श्याम–गौर सबहक चितचोर।

---❀---

(३५)

देखल पिय सपना अजगुत भारी।
बाग देखैलाऽ ऐला सुन्दर, श्याम–गौर धनुधारी।
बयस किशोर रूप मनमोहन, शोभाअकथ अपारी।
मोर पाँखि लागल सिर उपर, सुमन सिंगार सम्हारी।
लचकल जुलुफ भृकुटि अति सुन्दर, तिलक रेख दुतिकारी।
कमल नयन जादू भरने छथि मन्द हँसनि मन हारी।
चितवनि चारू चुभल उर अन्तर, गेलहुँ अपन पौहारी।
बागहिं माँझ कुँवर दुनु ऐला, रहलहु ठाढ़क ठाढ़ी।
"पटरानी" मालिन वानी सुनि, माली सगुन विचारी।

---❀---

(३६)

श्रीमिथिला पुर दर्शन चाह
मगन मन मनहिं मनौलनि ईश।
रक्षपाल त्रिपुरारि सदाशिव,
कृपा करहुँ हे गौरी गौरीश।
लखन लालसा सकुचि सुनौलनि
गुरूपद पद्म नवौलनि शीश।
आज्ञा पावि मुदित मन चलला
देखन नगर कुँवर जगदीश।

---❀---

(३७)

नगर रम्यता देखिकऽ रघुनन्दन दुनु भाय।
अति हरषित गदगद भेला, मन्द–मन्द मुसुकाय।।

• • •

नगर में हलचल–हलचल भेल !
अयला राजकुँवर दुनू भैया, कोन गली सँ गेल।।
बालक–वृन्द ललकि संग लागल, सबहक पुण्य पुराकृत जागल
श्याम गौर सब अंग मनोहर, सबहक मन हरिलेल।।
रूप अनूप मदनमनमोहन, नख–शिख शुभग सिंगार सुसोहन
कमलनयन चितवनि मुसकनि में, जनु जादू के खेल।।
पुरवासिन जखने सुनिपौलनि, काम धाम के सुधि विसरौलनि
जनु रंकन्ह निधि लूटन जाइछ, छूटि रहल अछि मेल।।
जोड़ी निरखि परम सुख पौलनि, नयनक फल लहि हृदय जुड़ैलनि
"पटरानी" सिया जोग सुन्दरवर, जनु विधिना रचि देल।।



(३८)

उझकि झरोखनि झाँखिकय श्यामल गोर सरूप।
सुमुखि सुलोचनि मुदित भेली, देखितहिं रूप अनूप।।

• • •

मन होइय ऽ अनूप रूप देखिते रही।
किछु बजितथि अमोल बोल सुनिते रही।। मन.....
काल्हि सुनलउँ जे मुनि संग में पैदल ऐला,
देखि ज्ञानी विदेह सेहो मोहित भेला।

मुनि कौशिक स पुछलनि इके छथि सही।। मन.....
छथि अवध नृपति दसरथ के सुवन,
राम कौशिल्या कुमार लखन सुमित्राललन।
सब प्राणिहुँ के प्राण प्रिय जीवन जड़ी।। मन.....
बूढ़ ब्रह्मा चतुर्मुख और विष्णु भुजाचारि,
छथि शंकर भयंकर मुख पंच पुरारि।
कोनो देवो नै एहन जे उपमा कही।। मन.....
कोटि मनमथ लजाएल नवल रूप पर
बसि कैला ई घुमि–घुमिक मिथिला नगर।
चित चाहै लगावी सुमन के झड़ी।। मन.....
विधि रचलनि कोना एहन श्यामल सुघर
छथि जेहने सलोनी किशोरी हमर।
सखी "पटरानी" सियाराम जोड़ी चही।। मन.....



(३६)

कहथि परस्पर हे सखी, सुनलहुँ हिनकर नाम।
चक्रवर्ती अवधेश सुत, यैह छथि लक्ष्मण राम।।
हिनकर सुषमा देखु सखी, छथि शोभा के धाम।।
लज्जित होइ छथि देखिकय, कोटि–कोटि सतकाम।।
श्याम गोर सुकुमार दुहुँ, छथि सुषमा के ऐन।
मोहित नहि के जगत में, निरखि सुराजिव नैन।।
हम सब धन–धन भेलहु सखी, लोचन के फल लेल।
"पटरानी" सिया जोग वर, धन विधिना रचि ढेल।।



(४०)

झमकि–झमकि झाँखथि झूमि झाँकी झरोखनि सँ,
सुन्दर सुकुमार शोभाधाम श्याम गोर के।
रमकि–रमकि रमकथि राम रौनक निहारि छटा,
सुखमय सोहावन अरूणोदय जनु भोर के।
दमकि–दमकि दामिन दुति मन्द करथि चढलि अटा,
श्यामघटा देखि जेना नाचय मनमोर के।
चमकि–चमकि चुनरी के ओट चारू चन्द्र मुखी,
वृन्द–वृन्द सुमुखि सुलोचनि चहुओर के।
गमकि–गमकि गेन्दा गुलदाउरी गुलाब जकाँ,
विहँसि–विहँसि वरसथि दय सुमन चित चोर के।
छमकि–छमकि छम छम पग नूपुर झनकार करथि,
"पटरानी" ताकैलाऽ अवधकिशोर के।



(४१)

मोर बोलैय ऽ चकोर बोलैय ऽ
आइ सिया बगिया में चितचोर ऐलैया ऽ ।।
श्याम गोर सब अंग मनोहर,
चित चाहै हिया राखि धरोहर।
काल्हि हिनके ला ऽ गली गली शोर भेलैय ऽ ।। आइ......
निज करकमल में फुलक दोना,
घूमि रहल छथि सुघर सलोना।
देखै छियैन् जखने स भोर भेलैय ऽ ।। आइ.....
रूप अपार मदन मद मोचन,
जुलुम करै छैन राजिव लोचन।
एक सखि देखिते विभोर भेलैय ऽ ।। आइ......
चातक–कोकिल कहे शुकसारी,

सिया जोग श्यामल धनुधारी
देखि जीवन सुफल आजु मोर भेलैय ऽ ।। आइ.....
सुनि पौलनि मिथिलेशदुलारी,
राजकुँवर ऐला फुलवारी
"पटरानी" हिया में हिलोर भेलैय ऽ ।। आइ.....



(४२)

बगिया में ऐलइ चितचोर
हे सहेलिया छथि मन मोहन।
अंग सुअंग फवि, कोटि मदन छवि,
एक श्यामल एक गोर। हे.....
नख–शिख रूप देखि, सब बिसरल शेखी,
हेरिते हरल मन मोर। हे.....
जिया ललचाइय ऽ लखि, दृग चितवन चखि,
झहरल नयना स नोर। हे.....
छारि लोक लाज छल, लिय नयनक फल,
"पटरानी" भाग्य भेल जोर। हे.....



(४३)

सखि श्यामसुन्दर चितचोर, भेटल फुलवारी में।।
सुमन लेवय अयला दुनु भैया, अवधक राजकिशोर।।
श्याम गोर छवि छटा मनोहर, लाजय काम करोड़।।
श्रीकरकमल सोहावन दोना, घुमैत विपिन चहुँओर।।
लखितहि रूप भेल मति भोरी, कतलकरय दृग कोर।।
"पटरानी" झट चलु सिय स्वामिनी, यहय ऽ अरजि अछि मोर।।



(४४)

हमरा लली जू के निहारि हे,
बलिहार भेला बगिये में पहुना।।
शशि मुख चख के चकोर बनौलनि
चखलनि दृग पट टारी हे।। बलिहार..
निरखि–निरखि छवि अति सुख पौलनि
सुधि–बुधि देलनि विसारि हे।। बलिहार..
कोमल स्वभाव गुनि हिया हुलसौलनि
शील सनेह विचारि हे।। बलिहार..
हिय पट प्रेमक रंग बनौलनि
चित्रित कैलनि सम्हारि हे।। बलिहार..
रघुवंशी के गर्व गमौलनि
विरद के देलनि बिगारि हे।। बलिहार..
"पटरानी" गुरूवर सँ डरैलनि
सब छल देलनि उघारि हे।। बलिहार..



(४५)

धनुष यज्ञ सुनि ऐला, हे मनमोहन छैला।।
मुनि संग ऐला, छवि छहरैला, मिथिला सकल बसि कैला।। हे...
रूप सजैला, मृदु मुसुकैला, चितवन चारू चुभैला।। हे...
मिथिला गली–गली घुमि ऐला, नगर में शोर मचैला।। हे...
फूल लोढ़ैं बगिया में ऐला, शौकत शान गमैला।। हे...
सुन्दरता के गर्व देखैला, सिय छवि लखि ललचैला।। हे...
लली लोभ सँ पैदल ऐला, रघुकुल नाम हँसैला।। हे...
"पटरानी" सबके मोहि ऐला, अपने आवि मोहैला।। हे...



(४६)

झुकि जैयउ रघुलाल सिया जू पहिरौती जयमाल,
आहाँ भगेलउँ नेहाल सिया जू दुलहिन पौलउँ यौ।।
सून्-सून् दुलहाराम, ईथिक पावन मिथिलाधाम,
पूरन भेल मन काम, जाइला ऽ पैदल ऐलउँ यौ।।
एकटक देखइ छथि समाज, आहाँ छोरू नखरा, नाज,
कनियोंक करियौ लेहाज आवत ऽ पाहुन भेलउँ यौ।।
धन मिथिला महारानी, देलनि सिया "पटरानी"
विश्व विजयी कहैलउँ, यश जग में छैलउँ यौ।।

---❀---

(४७)

झुकि जैयउ कुँवर रघुलाल, पहिरलिय जयमाला।
ईजनि बूझू अवध केर आँगन,बैसल राज समाज,
धनुषकेर जगशाला।।
श्री करकमल विसद कीरति के,माल नैने छथि ठाढ़।
वरन ला ऽ सियबाला।।
धनुष टूककेर अहिमित मन में,जनि करू राजकुमार।
लगै छी दिलवाला !!
सकुच छोड़ि झुकि जाउ मुदित मन पहिरौती जयमाल,
बनब वर रघुलाला !!
अति सुकमारी सिया "पटरानी" जौ नहि मानब नृपलाल,
परब सखियन पाला !!

---❀---

(४८)

कवन सुकृत फल मिथिला जनम भेल।
सिया जू बहिन भेली मोर, हे सखि पाहुन नवल चितचोर।।

जेहने किशोरी सकल गुण आगरि,
तेहने श्रीअवध किशोर।। हे सखी...
अपना पाहुन जी के जुलुफ सँम्हारब,
अतर सँकरि सराबोर।। हे सखी...
अपना पाहुन जी के पान पबायब,
मुसकनि परहोयवै विभोर।। हे सखी...
मौरक शोभा नयन भरि निरखब,
लट–लटकल चहुँओर।। हे सखी...
मणिन मण्डप तर प्यारी लली संग,
भाँवर घुमायब गाँठजोड़।। हे सखी...
अपना पाहुन जी के कोहबर बैसायब,
गारि सुनायब रसबोर।। हे सखी...
"पटरानी" के अभिलाष नै दोसर,
एतवै मनोरथ मोर।। हे सखी...



(४६)

।। सीताराम विवाह।।

"तिलक चढ़ावन"

देखु–देखु–देखू सजनी शोभा अपरम्पार गे माइ।
चहल–पहल भेलै राज–दरबार गे माइ।।
तिलक चढ़ावन के विधि व्यवहार गे माइ।
महीसुर मण्डली में पड़ल हकार गे माइ।।
सुरभि गोबर नीपी अँगना ओसार गे माइ।
गज मोती चौक पूरल फूल झाड़ गे माइ।।
दधि दुर्बाक्षत फूलक हार गे माइ।
साजि–साजि राखल अछि मणिनक थार गे माइ।।

वस्तु अनेक रंग, अकथ अपार गे माइ।
हीरा मणि माणिक, मोतिन झलकार गे माइ।।
तिलक लेबैला ऽ अयला, चारू सुकुमार गे माइ।
श्याम गोर जोड़ छवि, रूप उजियार गे माइ।।
भाल में तिलक आँखी शोभे कजरार गे माइ।
पानक ऽ शान सँ अधर अरूणार गे माइ।।
जड़ित बसन तन शोभे कोरदार गे माइ।
जगमग भूषण दामिनि दुति हार गे माइ।।
बैसला मुदित मन राजकुमार गे माइ।
सब द्विजवर देल तिलक लिलार गे माइ।।
पुर नर नारी देल आशिष हजार गे माइ।
सुमन वरषि सुर करै जै जैकार गे माइ।।
"पटरानी" धनधन जीवन हमार गे माइ।
छवि छाँकि–छाँकि गावै मँगलचार गे माइ।।



(५०)

माइ हे तिलक चढै छैन आजु सुघर रघुनन्दन दुलहा के
माइ हे आबि गेल सकल समाज देखन जगबन्दन दुलहा के
माइ हे चम चम चमकय भाल, तिलक चारू चन्दन दुलहा के
माइ हे कमल नयन कजरारि हँसनि मन्द मन्दन दुलहा के
माइ हे पीत बसन उपवीत सुधारी सुख कन्दन दुलहा के
माइ हे दुर्वा दधि फल पान हरदि कर कंजन दुलहा के
माइ हे द्विजवर तिलक चढ़ावोल मुदित मन रंजन दुलहा के
माइ हे सुरन्ह सुमन बरषाय करथि अभिनन्दन दुलहा के
माइ हे जय–जय होय चहुँ ओर आशिष रंग रंगन दुलहा के
"पटरानी सखी" बलिहारी सुछवि अंग–अंगन्ह दुलहा के



(५१)

।। मंगलचार।।

आहे आजु सुदिन शुभमंगल शुभ–शुभ गाउ सजनी।
सब सिधिदायक गणपति प्रथम मनाउ सजनी।।
पूजब शंभुभवानी चरण गोहराउ सजनी।
जनक लली रघुलाल के लगन जगाउ सजनी।।
रमारमण पदबन्दि परमसुख पाउ सजनी।
सिया रघुवर के बिआह हरषि हिय गाउ सजनी।।
दिनकर देव सँ कर जोरि शीश नबाउ सजनी।
वर दुलहिन के दिवाकर अमर बनाउ सजनी।।
चौदहो भुवन देवी देवसँ अरजि सुनाउ सजनी।
हिलि–मिलि वर माँगि सिया के सोहाग बढ़ाउ सजनी।।
धन्य जनम मिथिलापुर भाग्य मनाउ सजनी।
देखि "पटरानी" सिया के विआह नयन फल पाउ सजनी।।



(५२)

गे माइ मंगल मूल लगन दिन आयल
सिया जू के हैतइन विआह।
मिथिला आनन्द सिन्धु उमरि गेल
घर–घर भेल उत्साह।
जनकलली जू के भाग्य त देखियौन
विधि–विधान कहु काह।
गे माइ अपने सँ श्याम सुन्दर वर अयला
तोड़लनि धनुष अथाह।
राजा जनक जी रानी सुनयना
सुख सँ भेलनि बताह।

गे माइ तहिना नारि पुरूष मिथिला के
कहि ने सकथि अहिनाह।।
मण्डप रचना एहन रचाओल
ब्रह्मा चकित भेलाह।
गे माइ चित्र विचित्र मणिनमय चहुँदिस
कवि उर नहिं उपमाँह।
सहित समाज अवध सँ अयला
चक्रवर्ती बादशाह।
गे माइ मण्डप निरखि हरषि मन ही मन
वरनि कहथि वाह वाह।।
राजकुँवर वर दुलहा बनता
सबहक यैह चितचाह।
गे माइ "पटरानी" सिया दुलहिन बनती
देखब विआह उछाह।।



(५३)

गे माइ आजु सुदिन शुभ मंगल मिथिला आनन्द कहलो ने जाय।
दूलहा राम रूप–गुण आगर भेलखिन जनक जमाय।
घर–घर मंगल साज सजाओल देवी देव मनाय।
गे माइ चहुँदिश मंगल बाजन बाजय तियगन मंगल गाय।
बालक बृद्ध युवा नर नागरि सबहक हिया हुलसाय।
गे माइ वर भागी मिथिला पुरबासी सुरगण देखि सिहाय।
मंगलमय मणि मण्डप रचना मंगल चित्र बनाय।
गे माइ मंगल गज मोती चौक पुराओल मंगल कलश धराय।
सुन्दर श्याम दुलह सिय दुलहिन वैसथिन गाँठ जोराय।
गे माइ हम सब धन्य–धन्य भय जायब निरखब नयन अघाय।

धन विदेह धन रानी सुनयना चौदह भुवन यश छाय।
गे माइ जिनक सुकृत फल सियाधिया प्राटलि"पटरानी" जीवन जुड़य।



(५४)

"धान बट्टी"

आजु मिथिला पुरी शुभ मंगल, सोहावन–सोहावन सखी।
ऐलखिन अवधपुर सँ ब्राह्मण, लगन बँट वाबन सखी।।
आनि धयल मणि चौकी सुमखमल, विछावन सखी।
बैसला सुमरि गणनायक मंगल करावन सखी।।
जानि सुलगन सतानन्द सब विधि पावन सखी।
फेटल हरदि दुभिधान बाजय बहु बाजन सखी।।
शुभ–शुभ मंगलगान आनन्द बढ़ावन सखी।
बाँटि परस्पर दुहूँ दिश हिया उमगावन सखी।।
दान–मान परिपूरण भेलाह ओ ब्राह्मण सखी।
"पटरानी" धन–धन मिथिला जगत जस छावन सखी।।



(५५)

"हरदी बुकावन"

आउ आउ सजनी सोहागिन अति वर भागिनि हे।
माइ हे सिया जू के हरदि बुकावन होयत उबटावन हे।
अतर सुगंध फुलेल चमेलीक तेल धरू हे।
माइ हे सिन्दुर भरल सिंघोरा सोहागिन के माँग भरू हे।
गावि–गावि मंगलगान देवन्ह सँ अरजिकरू हे ।
माइ हे लाड़ली के अचल सोहाग बनाउ सब मिलि ढरू हे।
सुरमुनि करे जैजैकार गगन सँ सुमन झरै हे।
माइ हे "पटरानी सखी" बलिहार मुदित मन बीधकरै हे।

(५६)

देखू–देखू सखी लगन लगावन, हरदि बुकावन हे ।।
ऐली झुण्ड–झुण्ड नारि, ललि छवि उर धारि,
होव लागल शुभमंगल गावन हरदि बुकावन हे ।।
दय अतर फुलेल, माँग सिन्दुर भरि देल,
हिया आनन्द उमगि उमगावन, हरदि बुकावन हे ।।
मिथिलानि नव नारि, गावय अपने में गारि,
सुख रस वरषय जेना सावन, हरदि बुकावन हे ।।
सुनि मंगल झमेल मन गदगद भेल,
चारु दुलहिन दुलह मिलावन हरदि बुकावन हे।।
चौदह भुवन उछाह, हैतैन सिया के विआह,
भेटल अवसर वर मनभावन, हरदि बुकावन हे।।
जागल मिथिला के भाग, बढ़ौन सिया के सोहाग
"पटरानी सखी" जिय के जुड़ावन हरदि बुकावन हे



(५७) ३

सखी हे हरदि चढ़ाऊ सुकुमारी सिया के।
शोभा कहलो ने जाइय ऽ आइ जनकधिया के।
मुख छवि परम गम्भीर लली केर।
मञ्जु मधुर मृदु कञ्ज कली केर।
मन प्रमुदित अलिगन सबतिया के।। सखी हे....
कनक कटोरी शुभ हरदि घोराओल।
मंगल–कलश भरि पल्लव धराओल।
सखि बारि देल सोने चउमुख दीया के।। सखी हे.
धै दुर्वादल मंगल गाओल।
पहिने जनकबाबा हरदि चढ़ाओल।

सुख अकथ बुझाइय, आइ सुनयना हिया के।। सखी हे...
उमगि–उमगि सखी हरदि चढ़ाओल।
शुभ–शुभ गावि बहु आशिष मनाओल।
'सखी पटरानी' निरखि जुराउ जिया के।। सखी हे...



(५८)
"मटकोर"

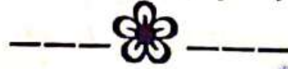
भेलइ मिथिला में शोर,
आजु सिया लाड़िली के छैन मटकोर।।
घर–घर बाजन बजैय ऽ घनघोर,
सबके हिया में उठय आनन्द हिलोर।। भेलइ...
सजि–सजि सखी सब भेली एक ठौर।
पहिरि–पहिरि ऐली जड़ित पटोर।। भेलइ...
मंगल कलश तेल अंकुरी सिंघोर,
कमला पुजनकेर वस्तु अथोर।। भेलइ...
साजि–साजि डाला–डाला लागि गेल छोर।
मंगल गावथि सखी प्रेम विभोर।। भेलइ...
अलिन चकोरी घेरी लेल चहुँ ओर।
लली मुख लागै जेना पूनम इजोर।। भेलइ...
धन एहि मिथिला जनम भेल मोर।
'पटरानी' सिया के देखब मटकोर।। भेलइ...



(५६)

चलू–चलू हे सहेली मटकोर करैला ऽ ।
आहे जुग–जुग सिया के सोहाग बढ़ैला ऽ ।।

अक्षत चन्दन फूलक ऽ माला,
तुलसी सुमन साजल भरिडाला।
मेवा पकवान नैवेद धरैला ऽ।। चलू.......
अरूण उदय जकाँ, चमके चँगेरा,
अंकुरी भरल पर माणिक सिँघोरा।
सिन्दुर सोहागिन के माँग भरैला ऽ।। चलू.......
मणिनक मालि में तेल चमेली,
हुलसि परसथिन नागरि नवेली।
सात सोहागिन के वीध करैला ऽ।। चलू.......
लक्ष्मी निधि भैया लेल सोने के कोदारी,
माटी कोर चलला कमला किनारी।
मणिन माँरव पर वेदी भरैला ऽ।। चलू ....
चढल विमान गगन सुर हरषय,
सुरतरू सुमन छनहिं छन बरषय।
गावय "पटरानी" मन मोद भरैला।। चलू ....



(६०)

"बरियात आगमन"

अवध से एलइ बरियात गे सजनी,
मिथिला के हिया हुलसात।।
अगनित झुण्ड आवय हाथी औ घोड़ा।
रथ पर ध्वजा फहरात गे सजनी।। मिथिला.....
रतनक पालकी अनेक बार बाहन।
ऊँट नेने साधू जमात गे सजनी।। मिथिला.....
बाजन के शोर घनघोर भेल भारी।
धमकय नगाड़ा के घात गे सजनी।। मिथिला.......

रोशनी अपार शोभा पञ्चमी के रात लागे।
कोटि शशी पूनम लजात गे सजनी।। मिथिला.......
एहन बरियात कतउ देखलउँ नै सुनलउँ
चौदह भुवन विख्यात गे सजनी।। मिथिला .....
"पटरानी" दुलहा के रूप अनमोल छवि।
देखि–देखि मनवाँ बेहाथ गे सजनी।। मिथिला.....



(६१)

घनघोर बाजा बाजय मिथिला नेहाल गे माइ।
ऐला बरियात साजि अवध भुवाल गे माइ।।
झुण्ड–झुण्ड हाथी आवय, हौदा लाले लाल गे माइ।
अगनित घन्टा धूनि करै अनकाल गे माइ।।
तुरंग अनेक रंग पवनक चाल गे माइ।
छैला असवार करय, कौतुक कमाल गे माइ।।
वाहन विविध हेम जेवरक जाल गे माइ।।
विभव अपार देखि लाजे लोकपाल गे माइ।।
रथपर गुरूबाबा दरशी त्रिकाल गे माइ।
अचरज एक रथ दशरथ सम्हाल गे माइ।।
लगन सँ पहिने ऐला राखि रक्षपाल गे माइ।
अवधक तिरिया सब बड़ उत्फाल गे माइ।।
राजकुमारी सब के एहन कुचालि गे माइ।
तपसी बाबा के देखिक होइछथि बेहाल गे माइ।।
सब बरियाती के तिलक शोभे भाल गे माइ।
बहिनी के चुनड़ी लेक ऽ ओढ़ने दोसाल गे माइ।।
"पटारानी" कते कहू अवधक हाल गे माइ।
दुलहा हँसै छथि धैने मुखपर रूमाल गे माइ।।



(६२)

सूनू यौ बरियतिया आहाँ बहिन बेचिक ऐलउ यौ।
जखने ऐलउँ जनकपुर में गाम के घिनौलउँ यौ।।
अपने सुन्दर साज सजैलउँ पट भूषण झमकैलउँ यौ।
घर में घरनी छल तकरा पोसिया लगेलउँ यौ।।
अपने चढ़लउँ हाथी घोड़ा, शंख निशान बजेलउँ यौ।
"पटरानी" नहि लाज आहाँ के, बहु के लूटि करयलउँ यौ ।।



(६३)

सुनू सुनू यौ समधी सरसगारी।
छथि बहसल अवधपुरके सबनारी।।
पुरखिन आहाँ के छथि अकथ छिनारी।
ओ अति उत्फाल बर जोड़दारी।। सुनू....
श्रीगंगा यमनुा औ सरयू बेचारी।
तकने घुरैछथि जटाधारी।। सुनू....
एकै पुरूष पर सात सै नारी।
सुनि के लगइय अचरजभारी।। सुनू.....
मदन विवश भेल छथि मतवारी।
हेति रखने हजारन ओ लगवारी।। सुनू.....
चलथि कुचालि सब राजकुमारी।
गेली तपसी के संग कुलकानि छारी।। सुनू.....
तीन "पटरानी" आहाँक अतिप्यारी।
खीर खाइते ओ कयलनि कमालभारी।। सुनू....



(६४)

द्वार पर ऐला भूपति लाल आरती साजू हे बहिना
ऐला सह समाज भूपाल,पालकी चढ़ि चढ़ि चारू लाल।
सुमंगल अछि अवसर ऐहिकाल।। आरती.......
कारी जुलुफ घटा घुँघराल,शीशमणि मौरिया करे कमाल।
विजुलिया चमकै चन्दन भाल।। आरती.......
अँजवने राजिव नयन विशाल,हँसै छथि दय मुख पर रूमाल।
निरखि जग के नहि होयत बेहाल।। आरती.....
गर में गज मुक्ता मणिमाल,जड़ित पीताम्बर चपकन साल।
श्रवण मणि कुण्डल चूमै गाल।। आरती.....
चारू कुँवर छयल छविधाम, विश्वमनमोहन छथि श्रीराम।
निरखि आजु जीवन भेल नेहाल।। आरती....
'पटरानी' दुलहा अभिराम, निछावर कोटि–कोटि शतकाम।
फँसल मन हैत रूप छवि जाल।। आरती....



(६५)

'परिछन'

चलली सुनयना रानी परिछ जमाय गे माइ।
मांगलिक हाला डाला आरती सजाय गे माइ।।
कंचन कलश आम पल्लव धराय गे माइ।
कमला सलिल भरी सिन्दुर लगाय गे माइ।।
भूषण वसन तन अति ही सोहाय गे माइ।
आनन्द उमगि उर सुख नै समाय गे माइ।।
देखलनि वर अपरूप चारू भाय गे माइ।
तन–मन सुधि–बुधि देल बिसराय गे माइ।।

धन–धन भेली आजू सिया जू के माय गे माइ।
पाओल नयनफल निरखि ज[illegible]ाय गे माइ।।
गावथि सोहागिन गीत हिया हुलसाय गे माइ।
गान तान सूनि–सूनि कोकिल लजाय गे माइ।।
धन धन मिथिला मैया लली प्रगटाय गे माइ।
जिनक कृपा सँ आजू दुनिया जुड़ाय गे माइ।।
गावय "पटरानी सखी" हिया उमगाय गे माइ।
नवल दुलह छवि कहलो ने जाय गे माइ।।



(६६)

सिया जू के दुलहा दिलदार हैं।
नख शिख सुषमा अपार है।।
माथे मणि मौरिया झलकारी है,जुलुफन की लट घुंघरारी है।
कानो में कुण्डल नगदार है।। नख–शिख......
भाल में तिलक शोभा भारी है,कोरे–कोरे अँखिया कजरारी है।
चितवन चुभीली सरमार है।। नख–शिख......
नाशामणि मोती दुतिकारी है;मुसकन अजब मन हारी है।
रसमय अधर अरूनार है।। नख–शिख......
वदन मदन मद हारी है,भूषण वसन जड़ीतारी है।
गले मणि मोतिन के हार है।। नख–शिख......
चरण में महावर की लाली है,नखमणि ललित निराली हे।
"पटरानी" प्राण के आधार हैं।। नख–शिख......



(६७)

मनमोहन दुलहा बिलोकू हे सखी।।
रूप अनूपक तखन बुझब सुख।

चलैत पलक कने रोकू हे सखी।।
चित्त एकाग्र बलि हँसनि तकनि पर।
लागल समाधी जनि टोकू हे सखी।।
सर्वस मनमोहन दुलहा छथि।
जग केर नाता दूर फेकू हे सखी।।
परिछन करू लोक विधिक विधान सँ।
सुषम शिला सँ गाल सेकू हे सखी।।
दधि केसर दियौन भाल लाल के।
नजरि उतारि पाछू फेंकू हे सखी।।
माय बहिन केर नाम कहवियौन।
आबिक दुआर कने छेंकू हे सखी।।
"पटरानी सखी" चारू पहुना के छवि आजु।
हुलसि हुलसि हिय देखू हे सखी।।



(६८)

"आँगन–प्रवेश"

हेयौ पाहुन सम्हरि चलू अंगना में।
ई जनि बूझू अवधक आंगन,
आहाँ आयल छी मिथिला में।। हे यो.....
श्री मिथिलापति केर आँगन अछि,
देखनुक चकमक बनल मणिन गछि।
आँगनक शोभा कोना कहब जहाँ,
विधियो भुलाइ छथि रचना में।। हे यौ.....
एम्हर ओम्हर जौं डेग बढ़ायब,
तखने अवधक नाम हँसायब।
माय बहिन किछियो नै सिखौलनि,

बाप देलनि मुनि मँगना में।। हे यौ......
सरहोजि सारि निहारि रहल छथि,
अहाँक परिक्षक वैहे बनल छथि।
चालि चलन केर जाँच होयत जौं,
सिया जू देखती कँगना में।। हे यौ......
लोक वीध एकउ नहि छोड़ब
प्रश्नक उत्तर नीक उचारब
"पटरानी" सब गुनक खानि
दुलहिन भेटती मुँह बजना में।। हे यौ......



(६९)

यौ दुलहा पहिरू वियहुती धोती हिया हुलसाय।
केलउँ केहन सुकृत भेलउँ जनक जमाय।।
यौ दुलहा यज्ञोपवीत पहिरू देवन्ह मनाय।
पुरहित आशिष मनौता मन्त्र मंगल सुनाय।।
यौ दुलहा कटि सुत्र पहिरू निज बल अजमाय।
अब तँ जुगल बनब गठबन्धन कराय।।
यौ दुलहा छोरू मनाओन धारन करू चारू भाय।
भेटती दुलहिन "पटरानी" राखब हिया में जोगाय।।



(७०)

"मण्डप परिकर्मा"

दुलहा सरकार करियौ मण्डप परिकर्मा।।
आहाँ जहिया सँ मिथिला में ऐलउँ,
पुरवासी सकल बसि कयलउँ।

भेल हलचल अपार करियौ मण्डप परिकर्मा।।
किया सबहक चित्त चोरयलउँ,
गर चादर लपेटि बन्हयलउँ।
करि पकरल सार, करियौ मण्डप परिकर्मा।।
अपना बहिनी के छोड़ि किया एलउँ,
हमरा भैया के जिया तरसयलउँ।
दियौन हुन को हकार करियौ मण्डप परिकर्मा।।
आहाँ परम उदार कहयलउँ,
शान्ती सर्वत्र लुटयलउँ।
संसारक सार, करियौ मण्डप परिकर्मा।।
आहाँ विश्व विजयी कहवयलउँ,
सिया "पटरानी" दुलहिन पयलउँ।
आब मानि लिय हार, करियौ मण्डप परिकर्मा।।



(७१)
"ओठंगर"

सम्हरि–सम्हरि कूटू धान यौ मन मोहन दुलहा।
बिसरू गरब गुमान यौ मनमोहन दुलहा।
काँच सूत में वान्हिक देखाल,
रघुवंशी केर शान यौ मनमोहन दुलहा।।
मणिक समाठ कनक केर ऊखरि,
बासमती देल धान यौ मनमोहन दुलहा।।
झमकि–झमकि कूटब चारू भैया,
तखन बनब मेहमान यौ मनमोहन दुलहा।।
आठ चोट गनि चाउर बनायब,
कंगनक होयत विधान यौ मन मोहन दुलहा।।

"पटरानी" सिया दुलहिन पायब,
पुरत सकल अरमान यौ मनमोहन दुलहा।।



(७२)

"पाद प्रक्षालन"

धन–धन भेली मातु सुनयना,
धन मिथिला पति जनक विदेह।
रघुनन्दन पदकमल धोवइ छथि,
शिव ब्रह्मादिक पूजित जेह।।
कंचनकलश सलिल कमला केर
मणिन थार भरि समटिसिनेह।
उमगि–उमगि अनुराग धोवैछथि
विसरल सुधि तन मन धन गेह।।
दूलह रूप निहारि मगन मन
भूपति भेला परम विदेह।
सुरमुनि जय जय कार करै छैनि
सुर तरू सुमन वरषि गेल मेह।
धन मिथिला धन–धन पुरवासी
जे चर–अचर धैने छथि देह।।
सबहक उर आनन्द उमरि गेल
पूरित सिया विवाहक धेह।
जीवन जनम सुफल भेल सजनी
सुख अपार कवि बरनत केह।।
पुनि–पुनि चरण पखारथि दम्पति
"पटरानी" उपजय नवनेह।।



(७३)

"कन्या निरिक्षण"

आहाँ चीन्हू यौ दुलहा अपन कनियाँ।।
बाम दहिन भए बैसलि सुन्दरि
एकै पटोर तर दुईजनियाँ।। आहाँ.......
लीय कमल कर आमक पल्लव
परखि उठाबू सुघर धनियाँ।। आहाँ.......
चालि चलनि एखने हम जाँचब
केहन अहाँक रघुकुल बनियाँ।। आहाँ........
चतुर शिरोमणि छुवि पल्लव सँ
विहँसि उठौलनि "पटरनियाँ"।। आहाँ.......



(७४)

हमर अपने किशोरी छथि सुन्दर एहन,
नहि पायब कतहुँ हेरू चौदह भुवन।
हिनका सँग में पाहुन जी लगइ छथि केहन
जेना राति इजोरिया में नील गगन।
हिनका देखिते पाहुन जी मोहैला एहन
भूलि गेला अवधपुर के मंगल भवन।
सखि मने मुसुकाइ छथि नृपति सुवन
रूप लखिते भेलैन मन आनन्द मगन।
"पटरानी सखी" के भेल सुफल जीवन
कहाँ पवितहुँ ऐहन अनमोल रतन।



(७५)

"दुलहा के नहछू"

रघुनन्दन नहछू विधान करू।
मिथिला पुर बासिन नाउनि के
रस प्रेम विनय कने कान धरू।
सिय नाम सुनैत पैदल ऐलउँ
भेल भाग्य उदय सेहो ज्ञान करू।
धनु भंग कैलउँ बर जस पैलउँ
जनि पाहुन तकर गुमान करू।
मन ही मन देव मनाय सिया
उठबौलनि से पहिचान करू।
दिय नेग हमर प्रमुदित मन सँ
चारू भाइ में बात मिलान करू।
प्रिय बहिन अहाँक माँगय हजमा
दय शान्ति नाउक सनमान करू।
भेटलनि एखने 'पटरानी' सिया
सुख आनन्द कतेक बखान करू।
नव दम्पति नेह बढावैला ऽ
पद पंकज कनेक प्रदान करू।



(७६)

"दुलहिन के नहछू"

सिय पद पंकज छुवितहि नाउनि, नेह नहाय नेहाल भेली।।
अनुपम अरूण सुकोमल तरवा, करतल धरैत हेमाल भेली।।
तन पुलकित भेल सजले सुलोचन, प्रेम मगन ओहिकाल भेली।।
जीवन जनम सुफल फल लहिकय, सुधि बुधि बिसरि बेहाल भेली।।
पौलनि सब सुख वैभव छन मह, सुरगन तिय हिय साल भेली।।

तर्शथि देखि भाग्य नाउनि केर,जय जय कहि उत्फाल भेली।।
नहछू करवथि मातु सुनयना, सुख अपार तत्काल भेली।।
"पटरानी" सिया नखमणि छुवितहिं, नाउनि मालोमाल भेली।।

(७७)

।। कंगन बन्धन।।

आजु दुलहा दुलहि कर कंगन बन्हाउ,
सखि अनुपम जोड़ी लखि बलि–बलि जाउ।।
आमक पल्लव शुभ सगुनक सूचक
बान्हि कर कमल में लगन लगाउ।।
मंगल करन हरन दुख दूसन
दम्पति प्रेम अचल करवाउ।।
"पटरानी" इ विवाहक भूषण
सब मिलि शुभ–शुभ आशिष मनाउ।।

(७८)

।। गठबन्धन।।

दुलहिन के देखि चारू दुलहा विभोरगठबन्धन कराउ बहिना।
चमकैय ऽ चुनरी पिताम्बर के छोरकसि गाँठ जोराउ बहिना।।

जेहने कुँवरि चारू रूप गुण आगरि
तेहने कुँवर चारू अवध किशोर कोना रचलनि चतुर विधिना।।
सिया मुख चन्दा छिटकि गेल चाँदनी
देखि देखि पहुना के नयना चकोर आब दीयौन बैसाय दहिना।।
शुभ–शुभ गावि सखि गाँठ जोड़ाओल
बरषैय नभ सँ सुमन झकझोर झरै सावन के मेघ जहिना।।

आब त नँवलवर सहजे बन्हैला
चलतैन नै एको बहाना निहोरहम रखवैन रहथु तहिना।।
जयति–जयति धुनि चहुँदिश छायल
धन–धन भेल तिथि पञ्चमी इजोर धन भेल अगहन महिना।।
सुर नर मुनि सब आशिष मनाओल
जुग–जुग जीवू सिया कौशल किशोर"पटरानी" बनल अहिना।।

(७६)

।। सिन्दुर दान।।

बर श्यामसुन्दर सिय माँग भरू।
लगन सुमंगल मूल सुअवसर
सकल सकुचपन दूर करू।।
सोन सुमन सन साजि कमलकर
सिया लाड़िली सिर सिन्दूर धरू।।
हाँस विनोद रहस वर रसगर
पाहुन कोहबर सुख भरपूर करू।।
"पटरानी" चितचोर नवलपर
सिया सीथ सिन्दूर सँ पूर करू।।

(८०)

दुलहा राजकुमार सुदुलहिन राजकुमारी।।
राज महल मण्डप पर राजित मौरी मौर सम्हारी।।
व्याह विभूषण अंग–अंग प्रति, गथित पिताम्बर साड़ी
जावक पद मेहँदी कर कंगन, सिन्दुर की अरूणारी
चितवनि तिरछी तकनि सुपरस्पर, कमलनयन कजरारी
युवराजा मिथिलापुर पाहुन, "पटरानी" सिया प्यारी

(८१)

दुलहिन के सूरत निहारी, दुलहछन छन बलिहारी।
अमित शरद शशिप्रभा प्रकाशित, कोटिन रति न्योछारी।
नेह भरल मृग मीन सुछवि, दृग रतनारी कजरारी।
अरूण अधर मृदु हँसनि सोहावनि, जनु वरषै रसवारी।
"पटरानी" पिय निरखि मगन मन, तन–मन–धन सब वारी।



(८२)

आइ सुनैना माइ के अंगना में झांकी झमके।
मणिमयरचना देखि चकित चित–विधियो के मन थमके
चारि दुलह दुलहिन मण्डप तर अनुपम रौनक रमके।
माथे मौरी मौर मनोहर, जगमग–जगमग जमके
जड़ित चूनरी पीताम्बर पट अंग विभूषण चमके।
रामलला छवि श्याम सघन, सिया दुलहिन दामिनि दमके
भरतलाल छवि नील गगन सन, माण्डवी प्रभा किरण के।
लखन शत्रुहन अपरूप दुलहा, जनु अनमोल रतन के
श्रुति कीरति उर्मिला नीलमणि, दिव्यदमक दुलहिन के।
नागरि मंगलगान करै छवि, सुफल जनम जीवन के
रंग–विरंगक बाजन बाजय द्वार नगाड़ा धमके।
शोभा सिन्धु अपार अलौकिक अकथ करत वर्णन के
"पटरानी" आनन्द मगन मन, देखि विआह बहिन के।



(८३)

निरेखू सखि दुलहा–दुलहिन हे
सिया संगमें सुभग मेहमान।।

मणिन मौर मौरी सिर जगमग
जनु चपला चमकान।।
लचकल जुलुफ भाल पर चानन
चिकुर छटा छहरान।।
मृगनैनी कजरारि कमल दृग
मधुर–मधुर मुस्कान।।
चड़ित चूनरी पीताम्बर पट
मणि भूषण झमकान।।
"पटरानी" मणि मण्डप नभमह
चारू इजोरिया चान।।

---❀---

(८४)

"चुमावन"

दुलहा–दुलहिन के धीरे चुमादियौन हे।।
आनन्द–रस वरषादियौन हे।।
रतनमणिन केर डाला बनाओल
दूभी औ धान सँ भरादियौन हे।। आनन्द...
दुर्बाक्षत कर लीय मुनिन्ह सब
वेदक मन्त्र सुनादियौन हे।। आनन्द...
डाला परसि–परसि दम्पति के
मंगल गावि चुमादियौन हे।। आनन्द...
चिर जीवथु प्रीतम "पटरानी"
सब मिलि आशिष मनादियौन है।। आनन्द...

---❀---

(८५)

"आशिष"

जुग जुग जीवू नवल दुलहा
सिया दुलहिन के संग में।
बाढौ नित नव मौरि मौर सिर,
बसन वियहुती साज सजा।।
बाढ़ौ नित रस रूप माधुरी,
रहू परस्पर छाँकि छँका
दम्पति नेह बढ़ौ नित अनुछन,
उर उमगैत अनुराग सदा।।
"पटरानी" बढ़ौ सुख सोहाग नित
लूटू कोवर कुञ्ज मजा।।



(८६)

।। देहरी छेकाइ ।।

देहरी छेकाइ नेग दीय प्रिय पहुना यौ।।
परम शौभाग्य मिथिला में ससुरारि पौलउँ
दुलहिन जनक जी के धिय–प्रिय पहुनायौ।।
जिनक कृपा सँ आहाँ पाहुन हमर भेलउँ
सब के जुरैलउँ जोहि जिय–प्रिय पहुनायौ।।
नेग बिनु को बरघर में जौं एकोटा डेग देलउँ
गारि पढ़ि सुनौती सब तिय प्रिय पहुनायौ।।
हम नै बुझब आहाँ बाबा जी के संग ऐलउँ
जनि करबाउ छीय छीय प्रिय पहुना यौ।।
शान्ति देवलाऽ हमरा भैया के सकारि लीयौन
तखन कोवर सुख लिय प्रिय पहुना यौ।।

"पटरानी" नेग में नै आओर किछु चाह केलउँ
सिया संग बसु मोर हिय प्रिय पहुना यौ।।



(८७)

।। पटिया समेट।।

सुमन के पटिया ओछाबू अवधेशिया,
बैसब गर भुज धारि, पाहुन कोवर सजावू सम्हारि
सीखू लालन कोवरे सँ बिछाओन
प्रेमक पूँजी विचारि, पाहुन.....
अपन कला दर्शाबू लली सौं
सस्ते भेटल ससुरारि, पाहुन........
सेवा करब अहिना दुलहिन के
आइये स लीयौन सकारि, पाहुन........
कोमल चरण ललि पटिया समेटथि
दुलहा ओछौलनि हारि, पाहुन.......
"पद्मलता" हैत टेढ़ विछावन,
सूनब हजारन गारि, पाहुन........



(८८)

कौने रंग बहिना, कवने रंग पहुना,
कओने रंग हे, सखि सुमन के पटिया।।
गोरे रंग बहिना, श्यामल रंग पहुना
से लाले रंग हे, सखि सुमन के पटिया।।
समटथि बहिना, ओछाबे हँसि पहुना
से लाले रंग हे, सखि सुमन के पटिया।।
सजवथि पहुना, कहथि अलि जहिना

से लाले रंग हे, सखि सुमन के पटिया।।
बैसलनि बहिना दहिन भए पहुना
से लाले रंग हे, सखि सुमन के पटिया।।
गावै "पटरनिया" निरखि वर कनियाँ
से लाले रंग हे, सखि सुमन के पटिया।।



(८६)

"कोवर"

आजु को वर के झाँकी मजेदार गे माई।।
रतनमहल में सिया जी के कोबर
मणिनक लागल के बार गे माइ।।
जेहन सुन्दरि छथि लाड़िली सोहागिन
तेहने सुभग दुलह दिलदार गे माइ।।
चारू नवल वर संग–संग दुलहिन
अलिगन घेरने हजार गे माइ।।
छवि छाँकि–छाँकि मिथिला मगन–मन
गारि गावथि रसदार गे माइ।।
"पद्मलता" लखि को वर गाओल
हाँस विनोद अपार गे माइ।।



(९०)

सखि राजित राजकुमार, लली संग को वर मैं।
मणिन मौर मौरी लड़ झलकै,
सजने वियहुती श्रृंगार, लली....
चन्द्रानन सँ अमिय जनु छलकैं,

सुषमा अमित अपार, लली....
अंग–अंग मणि भूषण चमकय
गथित बसन जड़ितार, लली....
घुंघट तर छवि रूप माधुरी
प्रभाकरय उजियार, लली....
मन मोहन दुलहा दुलहिन पर
"पद्मलता" बलिहार लली संग....



(६१)

दुलहा रघुलाल, विहसँथि कोवर भवनमें।
छैनि घेरने सकल नवनारी, ओ सरहोजिसारी,
देने मुख पर रूमाल, विहँसथि कोवर भवन में।
छथि उमा रमा ब्रह्माणी, अमित महारानी
संग सिया जू के बाल, बिहँसथि कोवर भवन में।
कहु दुलहा मोहन मनहारी, श्री अवध विहारी
कोन कुल के ई हाल, विहँसथि कोवर भवन में।
एक शान्तीवती छथि नारी, ओ परम छिनारी
जग घूमथि बेहाल, विहँसथि कोवर भवन में।
जहाँ सन्त देखथि जटाधारी, महातम भारी
सुनू तिनकर हवाल, विहँसथि कोवर भवन में।
छथि परम उदार बेचारी, टरथि नहिं टारी,
छैनि कुलटा के चालि, विहँसथि कोवर भवन में
चारू दुलहा चकित छथि भारी, ओ सुनि–सुनि गारी
मिथिलानी के जाल, विहँसथि कोवर भवन में।।
सब अलिगन हँसथि दै तारी मचत मोदभारी
"पटरानी" नेहाल विहँसथि कोवर भवन में।।



(६२)
।। कोवर में आरती ।।

कोवर में दुलहा दुलहिन चारि हे, उतारि लियौन आरती ।।
नखशिख सुषमा अपार हे, उतारि......
चरण महावर संगदार हे, उतारि ......
नखमणि ललित निहार हे, उतारि.......
धोती पीताम्बर कोरदार हे, उतारि.......
जगमग जामा जड़ीदार हे, उतारि......
लहंगा, चुनरी, बूटेदार हे, उतारि......
मणि मोती लागल किनार हे, उतारि......
गले मणि माला चन्द्रहार हे, उतारि......
गजलागजब गमकदार हे, उतारि......
माथे मणि और झलकार हे, उतारि......
कुंडल झुमक झमकदार हे, उतारि......
सजने वियहुती सिंगार हे, उतारि......
आमक कंगन शोभा सार हे, उतारि......
कोवर के झाँकी मजेदार हे, उतारि......
"पटरानी सखी" बलिहार हे उतारि......



(६३)
।। जेवनार ।।

पाहुन आहाँ के जेवनार यौ,
देखि किछुने फुरैयऽ।
व्यञ्जन के अछि भरमार यौ,
कैयो गनिने सकैयऽ।।
कुन्द पुष्प सन भात लगैयऽ,

राहरिक दालि स्वर्ण झलकैयऽ।
ताइ में पड़ल घृत ढार यौ,
कते गमगम करैयऽ।।
अदौरी, दनौरी, तिलौरी, फुलौरी,
मिथिला में सब सँ प्रसिद्ध कुम्हरौरी।
बर बड़ी के सँचार यौ,
सेहो देखिते बनैयऽ।।
रंग विरंगक, भुजुआ, भाजा,
पापड़ लगैय जेना टटके खाजा।
अगणित चटनी अँचार यौ,
जिय चटपट करैयऽ।।
भाँति–भाँति के साग रूचिकारी,
षटरस–मधुरस सब गुणकारी।
मिथिला के यैह ऽ व्यवहार यौ,
किया अचरच लगैयऽ।।
मालपुआ हलुआ औ पूड़ी कचौड़ी,
दही, चीनी, खोवा, सकरौरी।
मधुरक लागल कतारयौ,
आँखि अँहि के गरैयऽ।।
रूचि–रूचि जेमू कियाक सकुचाइ छी,
चारू भैया के हम चकिते देखइ छी।
छी हे भदेशक गवाँर यौ,
"पटरानी" कहैयऽ।।



(६४)

जेमू–जेमू ललीवर श्यामसुन्दर
ई स्वाद अनत कहाँ पायब यौ।।

गान करथि नवनारी, मुदित......
कामकला में कुशल अवधातिय
पुरूष सुनै छी अनाड़ी, मुदित......
तृप्ति नै पाबि सकल जग विहरथि
मदन विवश मतवारी, मुदित......
सन्त जनन्ह के तकने घुरै छथि
बहिन आहाँ क छिनारी, मुदित......
पाहुन केहन सुकुत आहाँ कैलउँ
मिथिला में भेल ससुरारी, मुदित......
दुलहिन एहन अनत कहाँ पबितउँ
"पदमलता" सनसारी, मुदित......



(६६)
"पान"

पान लैलउँ यतन सँ लगाय, पाविकने बूझ मजा।।
नागर पान प्रेम सँ रचि–रचि, मधुर मसाला मिलाय, पाविकने...
मोती चून दुगुन रस कथ में स्वाद कहल नहि जाय, पाविकने...
पुंगी केसर लौंग इलायची, मादक रस सरसाय, पाविकने...
पायब पान कहब आहाँ सब सँ मिथिलानिक गुन गाय, पाविकने...
लैत परस्पर पान अधर सँ, अनुप रंग दर्शाय, पाविकने...
"पटरानी" केर प्राण सँजीवन हेरू मधुर मुसकाय, पाविकने...



(६७)

"झाँकी"

दुलह छवि मन हरिया गे सजनी श्यामसुन्दर के।।
सिर मणि मौर छोर मुक्तालर
कुण्डल मणिन मकरिया, गे सजनी........
केसर खौर भृकुटि अति सुन्दर
घुघुरै जुलूफ घनकरिया, गे सजनी........
कमलनयन कोरदार काजरयुत
बस करि जुलमी नजरिया, गे सजनी........
अरूण अधार मुसुकान मनोहर
बुलकनि वर उजियरिया, गे सजनी........
जड़ित बसन कटि कसल सोहनगर
जगमग जामा केसरिया, गे सजनी........
नख–शिख सजल सिंगार विभूषन
मणि मोती लागल चदरिया, गे सजनी........
चित्रित चरण कमल सुमहावर
मुनि मन मधुप अगोरिया गेसजनी........
"पटरानी" सिया पावि मगन मन
निरखय सरहोजि सरिया गे सजनी........



(६८)

देखू झाँकी केहन मजेदार, दुलह सरकार जी के।।
जुलमी जुलुफ माथे मणि मौरिया
चमके चन्दनमां लिलार, दुलह सरकार जी के।।
गले मणि माल कटि जड़ित पिताम्बर
चादर अजब कोरदार, दुलह सरकार जी के।।

श्रवणकुण्डल मुख छवि मनहरिया
कमल नयन कजरार, दुलह सरकार जी के।।
चरण कमल में लागल महावर
नख शिख सजल सिंगार, दुलह सरकार जी के।।
बाम भाग दुलहिन "पटरानी"
बहिनी सिया जू हमार, दुलह सरकार जी के।।



(६६)

हमरा सिया जू के भेलखिन मेहमान हे,
निहारू अनमोल दुलहा।
सखि हे रूप गुण शीलक निधान हे निहारू......
सखि हे वदन सहस जनु चान हे निहारू......
सखि हे कोटि–कोटि मदन–लजान हे निहारू......
सखि हे हिनके करै छैन श्रुतिगान हे निहारू......
सखि हे वरनैय वेद पुरान हे निहारू......
सखि हे यैह ऽ छथि ज्ञानी केर ज्ञान हे निहारू......
सखि हे ऋषि–मुनि धरै छथि ध्यान हे निहारू......
सखि हे सूनै छी सुयश महान हे निहारू......
सखि हे हँसि–हँसि कुटलनि धान हे निहारू......
सखि हे यदपि सकल गुन खान हे निहारू......
सखि हे तैयो नहिं सिया के समान हे निहारू......
सखि हे यैह छथि रघुकुल शान हे निहारू......
सखि हे "पटरानी सखी" केर प्रान हे निहारू......



(१००)

सखि देखू रसिक दुलहा के, मधुर मुसुकावै छथि।
केसर खौर अँजावोल नैना,
अरूण अधर विहँसाके, सुधा वरषावै छथि।।
गोल कपोल जुलुफ झुकि झूलत,
बुलकनि डुलकि डोला के, जिया तरसावै छथि।।
मणि मुक्ता सिर मौर सुशोभित,
कुण्डल मकरिया लगा के, दमक दमकावै छथि।।
संग प्रिया सुकुमारी सलौनी
अदभुत छवि दरषाके, झाँकी झमकावै छथि।।
पटरानी बलिहारी रसिकवर
पावि श्री लाड़िली सिया के हिया हुलसावै छथि।।



(१०१)

"चतुर्थी दिनक"

एहन ससुरारि कोना पैलउँ यौ दुलहा, से कहू हमरा
कौन जप तप कैलउँ, से कहू हमरा।।
मिथिला शहर हमर बाबू के नगर कोना ऐलउँ दुलहा।
शिव धनुष चढैलउँ, से कहू हमरा।।
गुरू विश्वामित्र छथि भारी जादूगर, कोना पैलउँ दुलहा।
नारी शिला के वनैलउँ, सँ कहू दुलहा।।
ताड़िका सुबाहु मारि मारिच उरैलउँ से कहू दुलहा।
कोना जग्य के बचैलउँ, से कहू हमरा।।
मिथिला में आवि कोन जादू चलैलउँ, से कहू दुलहा।
आहाँ सब के फसैलउँ, से कहू हमरा।।
हमरा किशोरी जी के जोड़ी नै जग में से कहू दुलहा।

कोना दुलहिन बनैलउँ, से कहू हमरा।।
"पटरानी" बनती किशोरी जी हमर, आहाँ कहू दुलहा।
रहब मिथिले कोबर, से कहू हमरा।।

(१०२)

प्रिय पाहुन चिकुर सम्हारू, कोमल छथि प्यारी हमर।
मणि कंगही सँ नहु–नहु झारू, कोमल छथि प्यारी हमर।।
रेशम सौ बढि केश हिनक छनि
कने तेल चमेलीक ढारू।। कोमल......
मणि मुक्ताकेर चोटी गुथल छैनि
कने अपन कला सँ सम्हारू।। कोमल......
बेनी गूथि सिन्दूर विन्दी दय
कने ललि मुखचन्द्र निहारू।। कोमल......
"पद्मलता" ये हि माधुरी सुरति पर
निज तन–मन–धन न्यौछारू।। कोमल........

(१०३)

हे सखि दुलहा स कंगन खोलाउ नै, छथि देखवैन केहन बलवान।
छला तोड़ने धनुष वर शान सँ,आइ एखने गमौता गुमान।
जावत कंगन के खोलि नै देखौता ई,
तावत कोना सिया दुलहा कहौता ई
आइ देवी देव सब के मनौता ई,
नैत रघुकुल के नाम हँसौता ई
छथि चारु कुँवरवर वीर धनुधर,
सखि कहियौन पाहुन सकुचाउ नै

आइ भजायत आहाँ क पहचान।।
छलैन बीति गेल राजा के तीन पन,
पौलनि चारिम में चारि फल आहाँ सन
तीनू माय भेली खीर खाय धन–धन,
जखन ढरल जवानी कुम्हलायल तन
पाहुन बल ने जनाउ आब हार मानि जाउ,
सिया "पटरानी" पग सिर झुकाउ नै
आहाँ भेलउँ हमर मेहमान।।

---❀---

(१०४)

हमरा किशोरी जी के निरखय लगला पाहुन चितचोर।
सखि घुंघट हटौलनि की भेला विभोर।।
जगमग ज्योति लागे चूँदरी के ओट जेना पूनम इजोर।
खोललनि दृग पट बनि गेला चकोर।।
नेह सँ भरल नव नीरज समान कजरारी दृग कोर।
हिय सुमनक बान चोट मदन मरोर।।
सरस अधर पान मन्द मुसुकान लाल लालिमा हिलोर।
छैन चूमैला ऽ बेहाल पहुना क दूनू ठोर।।
रूप छवि माधुरी छकैत प्रिय पहुना भेलाह सराबोर।
दुलहिन "पटरानी" पैला भाग्य छैन जोर।।

---❀---

(१०५)
"जोग"

जोग टोना हमरा लाड़िली के करैय कमाल।।
प्रथमहिं सियाजू जोग जगौलनि,
मुट्ठी भरि में जगत समौलनि।

बिना बजौने पैदल ऐला रघुवंशी के लाल।।
दोसर सिया जू जोग जगौलनि,
गर में जयमाला पहिरौलनि।
सिय छवि रूप माधुरी लखितहिं पहुना भेला बेहाल।।
तेसर सिया जू जोग जगौलनि
वशीकरन कंगना में कैलनि।
"पटरानी" वसि भेला दुलहा फसला यन्त्रक जाल।।



(१०६)

जड़ी बिकए बस करिया, हे सखि मिथिला नगरिया।
से हो जड़ी पीलनि दुलह मनहरिया
पिवते भेला बेखबरिया हे सखि......
झुमैत ठार भेला कोवर दुअरिया
दुलहिन पर परलैन नजरिया, सखि......
हमरा किशोरी जी धैलनि अँचरिया
नमन करथि बेरी बेरिया, सखी......
अंब कोना जैता पाहुन अवध नगरिया
दुलहिन के बनला हजुरिया, सखि......
"पटरानी" बसि भेला दुलहा साँवरिया
प्रमुदित सखि सहचरिया, सखि......



(१०७)

"युगल छवि झाँकी"

कनेक हँसि हेरू दुलह सरकार,
दुलह सरकार, यौ पाहुन जी हमार। कनेक.....

रूप अनूप मदन मन मोहन,
जुलुम करैय ऽ वियहुती सिंगार। कनेक.....
काम कमान भृकुटि हिय वेधय,
तिरछी तकनि ओनयन कोरदार। कनेक.....
घायल मिथिलानिक अछि औषधि
दसनक दमक अधर अरूणार। कनेक.....
"पटरानी" छवि लखि हिय हुलसै
फीका लगैय सकल संसार। कनेक.....



(१०८)

अजब लागे झाँकी युगल रसिया के।
श्यामलि सूरति सुछवि सुहावनि,
गोरी वदन मोरी स्वामिनी सिया के।
चन्द्र चन्द्रिका वर दुलहिन छवि
जगमग मण्डप होत हिया के।
लहंगा लाल जड़ित मणि आँचर
पीताम्बर कटि सोहत पिया के।
अरूण अधर नाशामणि हलरत
नकबेसर हलरात प्रिया के।
मकराकृत कुण्डल दुति दमकय
झुमका झमकत जनक धिया के।
घन दामिनी दुति मन्द करत सखि
छवि "प्रीतम" पटरानी सिया के।



(१०६)

तन मन धन न्यौछारलौं यौ पाहुन मन्द हँसनि पर।
मन्द हँसन आहाँ क दाड़िम दसन पर
पान चभैत अरूणारी अधर रस सुधा बरिसन पर।
श्यामल वदन भाल केसर चन्दन पर
कमलनयन कजरारी फंसल मन तिरछी तकन पर।
चौतनि पीत मणिन चपकन पर
जुलुफ के लट घुघरारी अतर सींचन गमकन् पर।
गोल कपोल कुण्डल के हिलन पर
नाशामणि उजियारी अधर उपर हलरन पर।
पीताम्बर जड़ी सुकटि कसन पर
चादर जड़ित किनारी, चटकदारी चपकन पर।
कोटि काम रति रूपल तन पर
दुलहिन सिया "पटरानी" दुलहगर भुज लपटनपर।



(११०)

सखि कौशल किशोर भेला मन में विभोर बलिहारी।
प्राण प्यारी के सूरत निहारी।।
जे सकल भुवन मोहै छथि
जे रसिकन हिय सौहै छथि।
रूप लखिते चकित भेला भारी।। प्राण......
छवि छकिते यदपि रहै छथि
तैयो नहिं तृप्ति पवैछथि।
भेला विवश विश्व वशकारी।। प्राण......
गुण शील सुमरि हुलसै छथि
छवि प्रभा देखि पुलकै छथि।

जे कहवैत छथि रूप धारी।। प्राण......
पलभरि नहिं विलग रहैं छथि
तन मन न्यौछार करै छथि।
'पद्मलतिका'के प्रीतम बिहारी।। प्राण......



(१११)

पिया प्रीतम के रूप छवि छकिते रहै छथि किशोरी।
जेना चन्दा के निरखै चकोरी।।
छैन नेह भरल दुनु नयनहिं
नहिंतृप्ति पावथि दिन रैनहिं।
मन भरने उमंग सिया गोरी।। जेना......
पिय मुख छवि हिय सुख दैछथि
सुषमामृत मुदित पिबै छथि।
गलबहियाँ देने दूनू जोड़ी।। जेना......
छवि छँकथि परस्पर नैनहि
मनसिज रति धीर धरैनहि।
देखि अलिगण भेली मति भोरी।। जेना......
उपमा जग तूलि सकै नहिं
दम्पति सुख कहैत बनै नहिं।
'पद्मलतिका' युगल रस बोरी।। जेना......



(११२)

हमरा किशोरी जी के मोहिनी सुरतिया
ओ माधुरी मुरतिया मोहाय गेला हे।
पाहुन हुलसैत छतिया लोभाय गेला हे।।

घुंघट के ओट लागे दामिनीक जोतिया मोहाय गेला है।
हे निरखितहि पहुना जुड़ाय. गेला हे।।
अरूण अधर सुधा वृष्टि होइत हँसिया मोहाय गेला है।
पाहुन सुधि–बुधि सबटा भुलाय गेला हे।।
अंजन अजौने नेह भरल सु अँखिया मोहाय गेला है।
"रूपलखितहि पहुना बिकाय गेला हे।।
"पटरानी" छवि के छकैत राम रसिया मोहाय गेला है।
प्यारी लाड़िली के रंग में रंगाय गेला हे।।



(११३)
"आरती"

आरती करू, मोद मन भरू, सरूप निहारि क।
हे तन मन वारि क।।
कञ्जन थार सजाय सुबाती दिव्य ज्योतिदय बारू।
निरखि–निरखि दम्पति छवि सम्पति आरती मुदित उतारू।
चमक दृग अरू, दमक हिय धरू उरन्तर धारिक।
रंग भरल छवि रूप माधुरी उपमा अकथविचारू
नवल युगल दुलहा दुलहिन पर सुधि बुधि अपन बिसारू।
छयल सँ जरू, सु छवि दृग भरू, निमेष निवारिक।
पटरानी के प्राणजिवन छथि नैना अपन सम्हारू
दृष्टि दोष लागय नहि हिनका डीठ–मूठ न्यौछारू।
भाव सँ लढू युगल वशि करू, सकल छलछारिक।



(११४)
"पूष मास"

पाहुन प्रिय रघुलाला यौ रहू ओढ़ने दोशाला।
जाढ़ एहन बड़ जोर जनौलक
चिड़यी चुनमुन पाँखि फुलौलक।
सी सी कहि सब के सिहरौलक,
परैय पूषक पाला यौ।। रहू......
शिशिर सरस शोभा सरसौलक
आँचर सँ रवि उदय छिपौलक।
घास पात मोती झलकौलक,
शरद लागत फूलमाला यौ।। रहू......
बहिन अहाँक बर ज्योति जगौलक
मिथिला बासी के अपनौलक।
शान्ति पावि के नहि सुख पौलक
श्रृंगी ऋषि जी के शाला यौ।। रहूँ......
सहचरि सब सेवा सरसौलनि
गरम–गरम हलुआ बनबौलनि।
"पटरानी" सिय सहित पवौलनि
मन मोहन मतवाला यौ।। रहूँ......



(११५)
"बसन्त"

छहरै छैन केहन युगल छटा
सजने सिंगार बसन्ती में।
जनु दामिनि संग में श्याम घटा
सजने सिंगार बसन्ती में।
छैन कलगीं प्रीत ओ पाग पियर
पीतहिं रंग खौर भाल उपर

जगमगित चन्द्रिका जुलुफ लटा। सजने......
राजित श्री स्वर्ण सिंहासन पर
मणि मण्डप में गलबाँहि देने
मुसुकान मधुर लखु पलक हटा। सजने......
रोम–रोम में रौनक रमकै छनि
अंग–अंग विभूषन झमकै छनि
मणि जड़ित चूनड़ी पीत पटा। सजने......
बनमाल हृदय पर हलरै छनि
भ्रमरी सुगन्ध पर मढ़रै छनि
प्रमदा मन होइ छनि छटा पटा। सजने......
केसर केर अंग राग लेपल
छनि चरण कमल में छवि देखू
मुनि मधुप मधुकरी "पद्मलता"। सजने....



(११६)
"होली"

होरी खेलू ने सहेली रंग रसिया सँ।
हम सब निमि वंशी मिथिलानी, हारब किया क अवधेसिया सँ।
धरि पकरब सब अलिगन मिलिक, फँसब नै जुलुफ के फँसिया सँ।
गोल–कपोल गुलाल मलब हम बसि न होयब मृदुहँसिया सँ।
चपकन चादर पाग बोरब रंग जड़ित बसन कटि कसिया सँ।
झूला के फल आई चखैवनि एहि चितचोर भदेशिया सँ।
"पद्मलता" सब गर्व छोरैवनि रघुवंशिन के जसिया सँ।



(११७)

वर भाग्य सँ प्रियवर पाहुन जी
ससुरारि एहन पौलउँ, सम्हरि खेलू।

धूम कतेक मचावै छी, कहुना रंग बरसावै छी
पकरि–पकरि अलिगन के मुख में, अबिर–गुलाल लगावै छी
देखै छथि सबटा स्वामिनि जू रंगढार बहुत कैलउ सम्हरि खेलू।
जहाँ–जहाँ अलिगन पावै छी, उछलि–उछलि कय धावै छी
मिथिला के मरजाद केहन से, कनियोक हिया नै लावइ छी
अब बात हमर किछु कान धरू सत्कार बहुत कैलउँ सम्हरि खेलू।
जनि बूझूहम हारै छी रूप अहाँ क निहारै छी
पाहुन अपन बिचारिनेह सँ, सब करतूती बिसारै छी
"पटरानी" सिया जू प्रसादे अहाँ मेहमान हमर भेलउँ सम्हरि खेलू।



(११८)

हम से न करो वरजोरी ओ दिलदार,
गले चादर पकरि धरूँगी, गालन गुलाल मल दूँगी
प्यारे अवध छयल मनमोहन सुन लो बात हमारी
होली सम्हल खेलना होगा हम सब सरहोजि सारी
अनुसासकि राजकिशोरी ओदिलदार कुरफात न रंच सहूँगी
गालन गुलाल मल दूँगी
लाल तु है नव युवक, हैं हम सब नव यूवती मतवारी
तेरे हाथ अबीर कुमकुमा, मेरे हाथ पिचकारी
यह है मिथिला की खोरी ओदिलदार केसर सुरंग भर दुंगी
गालन गुलाल मल दूँगी
परे फेर तुम आज सखिन केगरूर गुमान बिसारो
सरन गहो मेरी लाड़ली जू के "पटरानी" के प्यारों
छल छन्द फन्द सब छोरो ओदिलदार नहि तो सब कुछकर दुँगी।
गालन गुलाल मल दूँगी



(११६)

सोच ओ विचार कर खेलिये रंगीले लाल
मिथिला की होली में सबकुछ गमाना होगा
वीरताई धीरताई छलबल से जीतने को
अलिगन के मध्य चतुराई न चलाना होगा
मर्जी हमारी चाहे जो–जो करवाउँ श्याम
रघुवंशी गर्व आज मन से हटाना होगा
"पटरानी" सीख नहिं मानोगे नवल लाल
तो अवध से शान्ती को निश्चय मँगवाना होगा
मिथिला निवासी जिन्हे चाहते है तन मन से
पाहुन निज बहिनी को घर–घर बसाना होगा



(१२०)

होली आई, मनभाई सुखदाई री अली,
होली आई री।
चहुँ दिस ते अलियाँ जुरि आई
घेरि–घेरि सब धाई री अली, होली......
पकरि दुकूल नवल रसिया को
सब चतुराई भुलाई री अली, होली........
चपकन चादर पाग कलँगी
सब उतारि धरवाई री अली, होली......
चोली चुन्दरी अमित विभूषण
सेन्दुर माँग भराई री अली, होली......
बिन्दी भाल नयन कजरारी
नथ झुमका झमकाई री अली, होली.....
मणिन जड़ित कंगना चूड़ी कर

मेंहदी अति हीं सुहाई री अली, होली......
रूप अनूप पीत घूँघटपट
कोटिन रती लजाई री अली, होली......
"पद्मलता" दुलहा मन मोहन
बनि दुलहिन मुसकाई री अली, होली......



(१२१)

"फूल बंगला"

पाहुन अहाँक मजेदार फूल बंगला।।
बेली, बसन्ती, हारी, हेना हजारी।
केतकी कमल कचनार फूल बंगला।।
जाहि, जूही, मोतिया, गुलाब, गुलदाउरी।
गमके गुलाइची गुलजार फूल बंगला।।
चम्पा–चमेली चारू–चन्द्रकला चाँदनी।
सीतल सुगन्ध के बहार फूल बँगला।।
"पटरानी" सिया संग रहि पिया प्रीतम।
करू नित नवल विहार फूल बंगला।।



(१२२)

फूल बंगला के शोभा अपार हे
निहारू भरि नैन सजनी।
विविधि सुमन केर बनल सिंहासन
कमल सहस दस कोमल आसन
सजि बैसला युगल सरकार हे
परम सुख दैन सजनी।

नवल अंग नव वसन विभूषण
नव दम्पति नव नेह मगन मन
नख–शिख सुमन सिंगार हे
लजावै रती मैन सजनी

मुख सरोज निरखै छथि छन छन
"पटरानी" रस वसि रघुनन्दन
सखि तन मन भेला बलिहार हे
विसरि दिन रैन सजनी

———❀———

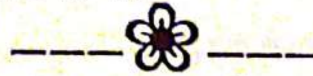
(१२३)

"झूला"

आजु हमर वरभाग, सत गुरू झूला झुलै छथि।
शिष्या–शिष्य सुछवि अवलोकथि,
भरि–भरि उर अनुराग।। सतगुरू......
श्री श्रींगारक श्रींग शिखर पर,
रस रेशम केर डोरि मनोहर।
भाव भावना पलना रचि–रचि,
रोम रोम रस पाग।। सतगुरू......
रहसि राम रमणीश नामरत,
सीता सीत समीर सुसरसत।
रसना रस अमृत धन बरसत
तरसथि रागिनि राग।। सतगुरू......
चलल प्रवाह सुसरित अमिय भरि,
भावुक हिय मुद मज्जन करि–करि।
"पटरानिक" सावन अछि घरि–घरि,
झुमि झुलवथि हिय बाग।। सतगुरू......

(१२४)

लागल नवल हिरोल सखी रे,
पावनि कमला कूले।
रंग–विरंग कमल जहाँ विकसल
भवँर–गुंजय सुख फूले।
श्री कंचन वन नव तरू छहियाँ,
नव हिरोल सुख मूले।
झुलवथि नवल–नवल बहु नागरि,
नव दम्पति समतूले।
नवल लतान नवल कुंजन में,
नवल रसिक दुहूँ झूले।
नव–नव रस वरषय सुख सरसय,
त्रिविध पवन अनुकूले।
नव–नव तान सुनावथि अलिगन,
लाजैत कोकिल हूले।
नृत्य सँ युगल उमंग वढ़ावथि
"पटरानी" सुधि भूले।



(१२५)

नहूँ झूलू दुलह सरकार, देखि मन मोद भरैय ऽ
पाहुन अहूँ लगै छी गमार, झोंका में मन वढ़ैय ऽ।।
झूला झुलक अहाँ पहिने स सिखितउँ।
चन्द्रकलादिक अलिगन स पुछितउँ
लली कोमल कली सँ सुकुमारि,
झोंका जुलूम करैय ऽ।
यौवन के मदजोर जनवितउँ।

पहिने ललौ पद वन्दन करितउँ।
छथि रूप शील गुनक आकार,
कनियोंने देह भरैय ऽ।।

चतुर शिरोमणि तखन कहवितउँ।
ललौ गलवाहि धरि नहुँ नहुँ झुलितउँ।
देखू पावनि ई कमला किनार,
शीतल समीर बहैय ऽ।।

भाग्य उदय भेल मिथिला में ऐलउँ।
हमरा किशोरी जी के दुलहा कहैलउँ।
पाहुन करू अपना मन में विचार
'पटरानी' झूठ कहैय ऽ।।



(१२६)

झूलू हिरोल मजेदार, यौ दुलहा मनमोहन।
करू सुन्दर सदन में विहार, यौ दुलहा मन मोहन
कवने सुकृत फल ऐलउँ जनकपुर।
हमरा सँ भेल सरोकार, यौ दुलहा मनमोहन।।
रीति–कुरिति भदेशक वासी।
पाहुन जी भेलउँ हमार, यौ दुलहा मनमोहन।।
सिया जू कृपा प्रसादे अपने।
लूटै छी पावस बहार, यौ दुलहा मनमोहन।।
ई सुख सरस अनत कहाँ पायब।
सिया जू के करू जै जैकार, यौ दुलहा मन मोहन।।
झूलू लपटि 'पटरानी' रसिक पिय
वनि ललौ गर भुजहार, यौ दुलहा मन मोहन।।



(१२७)

पाहुन भाग्य सँ सावन रसढारी पौलउँ यौ।
ससुरारी ऐलउँ यौ।।
परम पवित्र हमर मिथिला नगरिया।
कवने सुकृत फल, भेल ससुररिया।
छवि रूप गुन खानी सिया प्यारी पौलउँ यौ।।
नेति-नेति गावै वेद के श्रुति सगरिया।
हम ने बुझब आहाँ मुनि मन हरिया।
लाड़िली जू के झुलाव में, अनाड़ी भेलउँयौ।।
हम सब सिया जू के सखी सहचरिया।
गावि क सुनाउ आहाँ, सरस कजरिया।
हम पहिने जनै छी आहाँ हारि गेलउँ यौ।।
सुयश सुनै छी रूप धारी छी साँवरिया।
सब के मोहै छी हेरि तिरछी नजरिया।
"पटरानी" के निरखि बलिहारी भेलउँ यौ।।



(१२८)

युग-युग पिया प्यारी झुलैते रहू।
झुलैते रहू मुसुकैते रहू।।
छैल छबीली छटा छवि छजने।
रति मनमय लजवैते रहू।।
गलवहियाँ दय ललित कपोलन।
उमगि-उमगि मिलवैते रहू।।
सुख सोहाग वाढ़ौ नितनूतन।
झूलन पर झमकैते रहू।।

"पटरानी" रस वसि भय प्रीतम।
अलिगन के सुख दइते रहू।।



(१२६)

झूलन की झाँकी रसीली हे,
आरती करू सजनी।
मणिन खंभ मणि जड़ित पालना
रेशम डोरी सजीली हे आरती.........
राजित प्राण प्रिया संग प्रीतम
चितवनि चारू चुभीली हे आरती.........
अंग अनंग सिहाय वदन लखि
गलबहियाँ गर्बीली हे आरती.........
झूलन पर रसमत्त रसिकवर
अनुपम छवि दर्शीली हे आरती.........
"पटरानी" छवि रूप मगन मन
अलिगन हिय हुलसीली हे आरती.........



(१३०)

"जलविहार"

आली भीड़ भेलइ कमला किनार में,
चलु जल विहार देखौला ऽ।
नव नौका अनमोल, लागल ललित हिरोल,
झब्बा झुलकै मणिन फूल भार में।
साजि सोरहो सिंगार, सिया संग सरकार,
कोना झुलै छथिन उछलैत धार में।

देखि विमल तरंग, हिया उमगे उमंग,
छथि मगन सुगंध के फुहार में।
करि कौतुक विनोद, प्राण प्यारी नेने गोद,
रस उन्मत्त वर्षा बहार में।
श्री युगल दृग सैन, लखि लाजे रति मैन,
सुख वरषैय ऽ अलिन अपार में।
छवि रूप गुण खानि, पौलनि सिया "पटरानी"
धन भेला पाहुन ऐला ससुरारि में।



(१३१)

हे निहारू पिया कमला विमल हिलोर।
आहाँ रसिक शिरोमणि श्री कौशल किशोर।।
सुख सरसावै निज छवि दर्शावय।
अति निर्मल सलिल अमिय सँ वेजोड़।।
उर उमगावय नव प्रेम जगावय।
जल विहरैत भेल मन आनन्द विभोर।।
हिया हुलसावै अंग अंग पुलकावय।
वाढै "पटरानी" दम्पति रहस रसबोर।।



(१३२)

"सम्बन्ध पद"

सब गुन खानि हमर छथि स्वामिन,
हम छीं जनकदुलारी के।
बल भरोस दोसर नहिं हमरा,
बहिन सिया सुकुमारी के।।

जिनकर रूख राखथि छन ही छन,
देखियौन अवध विहारी के।
अमित कोटि ब्रह्माण्डक नायक
विवस भेल छथि प्यारी के।
व्यर्थ आव हम करब कि चिन्ता
गहि पकरल मुद भारी के।
प्रतिपल सुरति लागल चरणन में
प्रीतम प्राण पियारी के।
दिव्य भूमि में जन्म हमर थिक
कोखि सँ मिथिला नारी के।
खास बहिन छथि चन्द्रकलाजू
मुख्य सहेली प्यारी के।
जिनकर कृपा पावि सब अलिगन
सेवथि जनक दुलारी के।
पद्मलता लधु बहिन लली के
सारि श्री रसिक बिहारी के।



(१३३)

जगत के आस तजि स्वामिनि,
शरण में आवि बैसल छी।।
भरोसा नहि दोसर हमरा
अहिंक बल पाबि बैसल छी।।
ने कय सकलहुँ चरण सेवा
नै संगति साधु के कहियो
मलिन मति मन्द रहितहुँ में
अहिँक गुन गावि बैसल छी

सदति सुमिरन कैलउँ मन सँ,
नै अनकर हम भेलहुँ कहियो,
बालपन सौं अहीं के हम
अपन कहबाबि बैसल छी।।
हमर अधखानि अवगुण सब,
आहाँ अपनहुँ जनैते छी।
कहैत की पार पायब हम
चरण के ध्यावि बैसल छी।।
नै बिसरू "पद्मलतिका" के,
जगत में दुख बहुत पैलउँ।।
कृपा कें दृष्टि सँ हेरू,
सदति गोहराबि बैसल छी।।

---❀---

(१३४)

कृपा के कोर सँ कनेयो हेरू हे स्वामिनी हमरा
दुखी अति दीन के उपर ढरू हे स्वामिनी हमारा।।
जेहन छी हम अहीं के छी, नै दोसर के कहायेब हम
कमलकर माथ पर द्रविक धरू हे स्वामिनी हमरा।।
सदति व्याकुल रहै छी हम, जरैत अधअनल में निशिदिन
उपर सँ वृष्टि करूणाकेर, करू हे स्वामिनि हमरा।।
शरण में आवि "पटरानी" कतेक गंजन सहै छी हम
हृदय में प्रेम भक्ती सँ भरू हे स्वामिनी हमरा।।

---❀---

(१३५)

"चेतावनी"

रे मन भजन करू सीतारमण के।
नहि जानी कोन दसा हैतउ ऐहितन के।।
बहुत जनम तों भटकैत अएलैं
माया नगर में आवि सबटा भुलैलें
व्यर्थे गमौले इ मानव जीवन के।। रे मन......
बहु छल–बल करि सम्पति बटोरले
जाहि परिवार लेल धर्म–कर्म छोड़ले
साथी नै हेतउ छोड़ परतौ ओइ धन के।। रे मन......
उपर सँ रंग रूप सीट साट कैले
उरअन्तर में काम–क्रोध लोभ के बसौले
एक दिन गीदड़ घिसियैतउ अइ तन के।। रे मन......
प्रभुता के पावि निरधन के सतौले
"पटरानी" मोह मद पीवि बउरैले
कर में जंजीर लगतउ यम गन के।। रे मन......



(१३६)

श्री सीताराम नाम सुखधाम है,
रे भैया कलियुग में।
सब साधन आराधन गुलाम है,
रे भैया कलियुग में।।
राम नाम है अधम उधारन,
राम नाम है भव निधि तारन,
राम नाम कलि कलुष निवारन,
राम नाम सब संकट टारन

सब जीवों का यही विश्राम है।। रे भैया.......

राम नाम है सुर तरू छाया,
सुखी हुआ जो शरण में आया,
वर भागी प्रभु भक्त कहाया,
नाम प्रताप अमर पद पाया

प्रभु देत अर्थ धर्म मोक्ष काम है।। रे भैया........

सुमिरै पवन सुत भए बीर बँका।
समुद्र को लाँघ जला दिये लंका,
चहुँ युग में बजे नाम का डंगा,
नाम जपत मेटत सब शंका,

जो न भजते विधाता वा के वाम है।। रे भैया.

प्रभु की कृपा से नरतन पाया
विषय भोग में जनम गँवाया
सदगुरू सन्त वचन नहिं भाया
धिक जीवन सियाराम न गाया

"पटरानी" नमक हराम है।। रे भैया......



(१३७)

पारबती पति बम् बम् भोला,
दीन दयाल कहौने छी।

पापी तापी जे केओ भजलक
ककरा दया ने कैने छी।।

असरन शरण सुयश भरि जग में,
दयाक सिन्धु बहौने छी।

सुर नर निशिचर भूतपिशाच,
सभक आहाँ आस पुरौने छी।।

हम एक अबला शरण में ऐलउँ
आब किया देरि लगौने छी।
हमरा सन दुखिया नहि जग में
जतेक के दूख मेटौने छी।।
दुखहिं जनमभेल दुखहिं गमाओल,
कतेक कसुर हम कैने छी।
जतेक हमर अछि मन मनोरथ
सबटा मन में धैने छी।।
ककरा कहब सुनत के दोसर
चरण में आस लगौने छी।
छल प्रपञ्च "पटरानी" के मन में,
आहाँ स किछु नै छिपौने छी।।
प्रेम दिय सियाराम चरण में
एतवै लाऽ तरसौने छी।।



(१३८)

मिथिला महातम भारी हे सखि, करू परिकर्मा
केहि मिथिला एहि दिव्य–दिव्य भूमि सों
प्रगटलि सिया सुकुमारी हे सखि......
पतित पावनी कमला विमला
बहय सुधा सम वारी हे सखि......
दुग्धमती विरजादिक सरिता
सकल जीव उपकारी हे सखी......
सकल तीर्थ भेटत मिथिला में
पाप नसावनि हारी हे सखि......
मिथिला पुर के गली–गली में

विहरथि जनक दुलारी हे सखि......
ऐहि मिथिला के दहूँ दिसा में
रक्षपाल त्रिपुरारी हे सखि......
"पटरानी" परिकर्मा करिते
छूटत भव भयहारी हे सखि......



(१३६)

परिकर्मा करू सियाराम कहैत।।
एहन समैया भाग्य स भेटल
ठौर–ठौर में वास करैत।। परि......
ज्ञान कथा मिथिला के महातम
सन्तन्ह सौं उपदेश सुनैत।। परि......
सदगुरू सलिल नाम के साबुन
जनम जनम के मैल धोवैत।। परि......
दिव्य भूमि मिथिला के दर्शन
सिया जू चरण के ध्यान धरैत।। परि......
"पद्मलता" भव बन्धन छूटत
सियाराम के नाम रटैत।। परि.......



(१४०)

प्रिय पहुना के हिय में बसाय रख वैन।
बसाय रखवैन हम जोगाय रखवनि।।
अब कोना जाय देवनि हम सजनी।
दुलहिन के छवि पर लोभाय रखवैन।।
गाय बजाय दुलार प्यार पगि।

नित नव व्याह रचाय रखवैन।।
वर दुलहिनक सुछवि कोटि शशि सम।
निरखि नयन में चोराय रखवैन।।
"पटरानी" प्रीतम धन जीवन।
प्रेमक जादू चलाय रखवैन।

---❀---

(१४१)

हम जेवइ जनक पुर धाम बनत सब काम,
दया केर खानी सँ, सिया महरानी सँ।
होइत प्रात सियाराम सुमिरवै दूधमती स्नान,
घुमि–घुमि सन्तक दर्शन करवै युगल चरण केर ध्यान
भाव हिय भरब, अरजि हम करब, ई भव निधितरब,
बहिन जग जानी सँ, सिया महरानी सँ।।
सतगुरू महल के टहल बजैवइ छोरवै छल अभिमान
सुनि–सुनि मगन मनहिं मन होयवै श्रीमिथिलाक पुराण
त्रिताप ने जरब, कुमग नहि चलब, परन हम करब,
अभय वरदानी सँ सियामहरानी सँ।।
आदिशक्ति श्री जनक नन्दिनी, महिमा महा महान,
कृपा रूपिनी कल्याणी छथि, गावै वेद पुराण।
सु छवि हिय धरब, चरण हम परब, विनय बहुकरब
राम "पटरानी" सँ सियामहरानी सँ।।

---❀---

(१४२)

हे मिथिलेश नन्दनी स्वामिनि
सुदृष्टि हेरि करू दाया।

आतप भेल शरण हम ऐलहुँ
करू कर कमलक छाया।
अहिंक कृपा सँ भेटल हमरा
ई सुर दुर्लभ काया।
काम क्रोध मद लोभ लुटय घर
घेरने अबिद्या माया।
हम अकुलाय सकल दिस हेरल
केओ नहिं मोर सहाया।
नहिं जानी किया सुधि बिसरैलनि
प्राण जीवन रघुराया।
आब हम जाय कहब ककरा सँ
करूणामयि महि जाया
पटरानी कने हेरू कृपा सँ
बहिन अहिंक असहाया।



(१४३)

सिया जू हम कर जोरि कहै छी।
अहीं कहू हमरा सन कपटी,
जग में कतउ देखै छी।
काम क्रोध मद लोभ मोह बसि,
आन्हर भेल रहै छी,
बान्हि सकल मोहि नाच नचावय,
अपयस मारि सहै छी
अहीं केर चरण कमल दर्शन बिनु
तरसैत सदति रहै छी
दिवस रैन नहिं चैन पलहुँ छन
खान पान बिसरै छी

पारस मणि के छोरि करम बस
गुंजा गेरि गहै छी
पटरानी आब हेरू कृपा सौं
बहिन अपन कहबै छी



(१४४)

ए किशोरी जी अहींक चरणिया के आस
एहन दयालू आहाँ अधम उद्धारणि,
ए किशोरी जी तैयो हम भेलहुँ निरास
पल भरि चरणक ध्यान नहिं आबै
ए किशोरी जी मोहलक विषय विलास
अहाँक सुदृष्टि बिनु, के दुख मेटत
ए किशोरी जी काटत के भव केर फाँस
जग बिच स्वारथ के मीत सब भेटल
ए किशोरी जी करब ककर विश्वास
पटरानी सिया आब हिया बिच आवू
ए किशोरी जी करू पिया सहित निबास



(१४५)

स्वामिनि सिया सिया हे सिया जू।
प्रीतम संग मम मन मन्दिर में आठो याम विराजू।
कुल परिबार सबहिं मोहि त्यागल दर्सक संग समाजू।
हीत मीत सब स्वारथ साथी हम ककरा लग बाजू।
अहिंक चरण धन जीवन सर्बस बसि हिया में छबि छाजू।
पटरानी लघु बहिन अहिंक अछि हेरू सुदृष्टि प्रिया जू।

(१४६)

श्री मिथिला पुर परिकर्मा, है चौरासी कोस
बाट चलत सियाराम रटू, कटै तुम्हारे दोष
परिकर्मा में आय के, छोरू साँकठ चाल
माथे तिलक गले में कंठी, तबही गोटी लाल
तबहीं गोटी लाल नहीं तो बाजी हारी
मरने पर दुर्गती होय नरके अधिकारी
जल्दी जल्दी चेतिये, नहीं भरोसा काल्ह
काल सबन के शीश पै हाथ लिये यमजाल
कालहुँ से डरिये नहीं, रटिये सीताराम
सियाराम सबसे बड़े, जिनके काल गुलाम
हम न कहे मुख आपने, कहे संत भगवान
नहिं माने तो देखिये, चारो बेद प्रमाण



(१४७)

हम मूरख सबसे बड़े, करते पर उपदेश
निज मुख नाम रटे नहीं, सहते सदा कलेश।
हमको भी उपदेश यहै, रटें रटाबैं नाम
परमारथ के साथ ही, होय हमारो काम।
पावन श्री मिथिला पुरी, पावन सियबर नाम
शरण किशोरी की सदा, जीव लहै बिश्राम।
मंगलमयी श्री मैथली मंगल मिथिला धाम
दूलह वेष बिराजते जहाँ परात्पर राम।
श्री मिथिलापुर जो बसै, सियबर के गुन गाय
पटरानी तेहिं भाग्य पर ब्रम्हादिक ललचाय।
मिथिला मिथिला जो कहै, छोरि कपट छल छद्म

अनायास तेहिं उर बसै, सियाराम पद पदम।
मिथिला परिकर्मा करै, अग्नि कुण्ड नहाय
पटरानी सियाराम रटै, भव बंधन कटि जाय।
बोलिये श्रीमिथिला धाम की जय



(१४८)

जय जय श्री अवध धाम, जय जय श्री मिथिला।
सुमिरत साकेत नाम, सकल पाप सिथिला
अति पुनीत पुरिक धूरि ब्रम्ह आवै घूरि घूरि
मोद लहै भुरि भुरि, आनन्द मयी अचला
सियाराम जन्म भूमि ऋषी मुनि बसथि झुमि
बहय पतित पावनी, श्री सरयू श्री कमला
मज्जैत सुखसार मिलै युगल प्राणाधार मिलै
निर्मल जलधार सुधा, उज्वल अति अमला
सीता राम नाम देत, अंत परम धाम देत
जन मन अभिराम देत, क्षमा रूप छितिला
बरनै पुरान वेद, जानइ छथि संत भेद
पटरानी शरण आबि, माँगय सिय श्यमला



कल्याणी शारदा पाठक मुकामा
06132-233331